

प्रधानमंत्री कार्यालय



## मन की बात की 97वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (29.01.2023)

प्रविष्टि तिथि: 29 JAN 2023 11:35AM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। 2023 की यह पहली 'मन की बात' और उसके साथ-साथ, इस कार्यक्रम का सत्तानवे-वाँ(97<sup>th</sup> Episode) एपिसोड भी है। आप सभी के साथ एक बार फिर बातचीत करके, मुझे बहुत खुशी हो रही है। हर साल जनवरी का महीना काफी Eventful होता है। इस महीने, 14 जनवरी के आसपास उत्तर से दक्षिण तक और पूर्व से पश्चिम तक, देश-भर में त्योहारों की रौनक होती है। इसके बाद देश अपने गणतंत्र उत्सव भी मनाता है। इस बार भी गणतन्त्र दिवस समारोह में अनेक पहलुओं की काफी प्रशंसा हो रही है। जैसलमेर से पुष्कित ने मुझे लिखा है कि 26 जनवरी की परेड के दौरान कर्तव्य पथ का निर्माण करने वाले श्रमिकों को देखकर बहुत अच्छा लगा। कानपुर से जया ने लिखा है कि उन्हें परेड में शामिल झांकियों में भारतीय संस्कृति के विभिन्न पहलुओं को देखकर आनंद आया। इस परेड में पहली बार हिस्सा लेने वाली Women Camel Riders और CRPF की महिला टुकड़ी भी काफी सराहना हो रही है।

साथियो, देहरादून के वत्सल जी ने मुझे लिखा है कि 25 जनवरी का मैं हमेशा इंतजार करता हूँ क्योंकि उस दिन पद्म पुरस्कारों की घोषणा होती है और एक प्रकार से 25 तारीख की शाम ही मेरी 26 जनवरी की उमंग को और बढ़ा देती है। जमीनी स्तर पर अपने समर्पण और सेवा-भाव से उपलब्धि हासिल करने वालों को People's Padma को लेकर भी कई लोगों ने अपनी भावनाएँ साझा की हैं। इस बार पद्म पुरस्कार से सम्मानित होने वालों में जनजातीय समुदाय और जनजातीय जीवन से जुड़े लोगों का अच्छा-खासा प्रतिनिधित्व रहा है। जनजातीय जीवन, शहरों की भागदौड़ से अलग होता है, उसकी चुनौतियाँ भी अलग होती हैं। इसके बावजूद जनजातीय समाज, अपनी परम्पराओं को सहेजने के लिए हमेशा तत्पर रहते हैं। जनजातीय समुदायों से जुड़ी चीजों के संरक्षण और उन पर research के प्रयास भी होते हैं। ऐसे ही टोटो, हो, कुड़, कुवी और मांडा जैसी जनजातीय भाषाओं पर काम करने वाले कई महानुभावों को पद्म पुरस्कार मिले हैं। यह हम सभी के लिए गर्व की बात है। धानीराम टोटो, जानुम सिंह सोय और बी. रामकृष्ण रेड्डी जी के नाम, अब तो पूरा देश उनसे परिचित हो गया है। सिद्धी, जारवा और ओंगे जैसी आदि-जनजाति के साथ काम करने वाले लोगों को भी इस बार सम्मानित किया गया है। जैसे – हीराबाई लोबी, रतन चंद्र कार और ईश्वर चंद्र वर्मा जी। जनजातिय समुदाय हमारी धरती, हमारी विरासत का अभिन्न हिस्सा रहे हैं। देश और समाज के विकास में उनका योगदान बहुत महत्वपूर्ण है। उनके लिए काम करने वाले व्यक्तित्वों का सम्मान, नई पीढ़ी को भी प्रेरित करेगा। इस वर्ष पद्म पुरस्कारों की गूँज उन इलाकों में भी सुनाई दे रही है, जो नक्सल प्रभावित हुआ करते थे। अपने प्रयासों से नक्सल प्रभावित क्षेत्रों में गुमराह युवकों को सही राह दिखाने वालों को पद्म पुरस्कारों से सम्मानित किया गया है। इसके लिए कांकेर में लकड़ी पर नक्काशी करने वाले अजय कुमार मंडावी और गढ़चिरौली के प्रसिद्ध झाडीपट्टी रंगभूमि से जुड़े परशुराम कोमाजी खुणे को भी ये सम्मान मिला है। इसी प्रकार नॉर्थ-ईस्ट में अपनी संस्कृति के संरक्षण में जुटे रामकुईवांगबे निउमे, बिक्रम बहादुर जमातिया और करमा वांगचु को भी सम्मानित किया गया है।

साथियो, इस बार पद्म पुरस्कार से सम्मानित होने वालों में कई ऐसे लोग शामिल हैं, जिन्होंने संगीत की दुनिया को समृद्ध किया है। कौन होगा जिसको संगीत पसंद ना हो। हर किसी की संगीत की पसंद अलग-अलग हो सकती है, लेकिन संगीत हर किसी के जीवन का हिस्सा होता है। इस बार पद्म पुरस्कार पाने वालों में वो लोग हैं, जो, संतूर, बम्हुम, द्वितारा जैसे हमारे पारंपरिक वाद्ययंत्र की धुन बिखरने में महारत रखते हैं। गुलाम मोहम्मद ज़ाज़, मोआ सु-पोंग, री-सिंहबोर कुरका-लांग, मुनि-वेंकटप्पा और मंगल कांति राय ऐसे कितने ही नाम हैं जिनकी चारों तरफ़ चर्चा हो रही है।

साथियो, पद्म पुरस्कार पाने वाले अनेक लोग, हमारे बीच के वो साथी हैं, जिन्होंने, हमेशा देश को सर्वोपरि रखा, राष्ट्र प्रथम के सिद्धांत के लिए अपना जीवन समर्पित कर दिया। वो सेवाभाव से अपने काम में लगे रहे और इसके लिए उन्हें कभी किसी पुरस्कार की आशा नहीं की। वो जिनके लिए काम कर रहे हैं, उनके चेहरे का संतोष ही उनके लिए सबसे बड़ा award है। ऐसे समर्पित लोगों को सम्मानित करके हम देशवासियों का गौरव बढ़ा है। मैं सभी पद्म पुरस्कार विजेताओं के नाम भले ही यहाँ नहीं ले पाऊँ, लेकिन आप से मेरा आग्रह जरूर है, कि आप, पद्म पुरस्कार पाने वाले इन महानुभावों के प्रेरक जीवन के विषय में विस्तार से जानें और औरों को भी बताएं।

साथियो, आज जब हम आजादी के अमृत महोत्सव के दौरान गणतंत्र दिवस की चर्चा कर रहे हैं, तो मैं यहाँ एक दिलचस्प किताब का भी जिक्र करूंगा। कुछ हफ्ते पहले ही मुझे मिली इस book में एक बहुत ही interesting Subject पर चर्चा की गयी है। इस book का नाम India - The Mother of Democracy है और इसमें कई बेहतरीन Essays हैं। भारत दुनिया का सबसे बड़ा लोकतंत्र है और हम भारतीयों को इस बात का गर्व भी है कि हमारा देश Mother of Democracy भी है। लोकतंत्र हमारी रगों में है, हमारी संस्कृति में है - सदियों से यह हमारे कामकाज का भी एक अभिन्न हिस्सा रहा है। स्वभाव से, हम एक Democratic Society हैं। डॉ० अम्बेडकर ने बौद्ध भिक्षु संघ की तुलना भारतीय संसद से की थी। उन्होंने उसे एक ऐसी संस्था बताया था, जहाँ Motions, Resolutions, Quorum (कोरम), Voting और वोटों की गिनती के लिए कई नियम थे। बाबासाहेब का मानना था कि भगवान बुद्ध को इसकी प्रेरणा उस समय की राजनीतिक व्यवस्थाओं से मिली होगी।

तमिलनाडु में एक छोटा, लेकिन चर्चित गाँव है – उतिरमेरुर। यहाँ ग्यारह सौ-बारह सौ साल पहले का एक शिलालेख दुनिया भर को अचंभित करता है। यह शिलालेख एक Mini-Constitution की तरह है। इसमें विस्तार से बताया गया है कि ग्राम सभा का संचालन कैसे होना चाहिए और उसके सदस्यों के चयन की प्रक्रिया क्या हो। हमारे देश के इतिहास में Democratic Values का एक और उदाहरण है – 12वीं सदी के भगवान बसवेश्वर का अनुभव मंडपम। यहाँ free debate और discussion को प्रोत्साहन दिया जाता था। आपको यह जानकार हैरानी होगी कि यह Magna Carta से भी पहले की बात है। वारंगल के काकतीय वंश के राजाओं की गणतान्त्रिक परम्पराएं भी बहुत प्रसिद्ध थी। भक्ति आन्दोलन ने, पश्चिमी भारत में, लोकतंत्र की संस्कृति को आगे बढ़ाया। Book में सिख पंथ की लोकतान्त्रिक भावना पर भी एक लेख को शामिल किया गया है जो गुरु नानक देव जी के सर्वसम्मति से लिए गए निर्णयों पर प्रकाश डालता है। मध्य भारत की उरांव और मुंडा जनजातियों में community driven और consensus driven decision पर भी इस किताब में अच्छी जानकारी है। आप इस किताब को पढ़ने के बाद महसूस करेंगे कि कैसे देश के हर हिस्से में सदियों से लोकतंत्र की भावना प्रवाहित होती रही है। Mother of Democracy के रूप में, हमें, निरंतर इस विषय का गहन चिंतन भी करना चाहिए, चर्चा भी करना चाहिए और दुनिया को अवगत भी कराना चाहिए। इससे देश में लोकतंत्र की भावना और प्रगाढ़ होगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, अगर मैं आपसे पूछू कि योग दिवस और हमारे विभिन्न तरह के मोटे अनाजों - Millets में क्या common है तो आप सोचेंगे ये भी क्या तुलना हुई ? अगर मैं कहूँ कि दोनों में काफी कुछ common है तो आप हैरान हो जाएंगे। दरअसल संयुक्त राष्ट्र ने International Yoga Day और International Year of Millets, दोनों का ही निर्णय भारत के प्रस्ताव के बाद लिया है। दूसरी बात ये कि योग भी स्वास्थ्य से जुड़ा है और millets भी सेहत में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता है। तीसरी बात और महत्वपूर्ण है – दोनों ही अभियानों में जन-भागीदारी की वजह से क्रांति आ रही है। जिस तरह लोगों ने व्यापक स्तर पर सक्रिय भागीदारी करके योग और fitness को अपने जीवन का हिस्सा बनाया है उसी तरह millets को भी लोग बड़े पैमाने पर अपना रहे हैं। लोग अब millets को अपने खानपान का हिस्सा बना रहे हैं। इस बदलाव का बहुत बड़ा प्रभाव भी दिख रहा है। इससे एक तरफ वो छोटे किसान बहुत उत्साहित हैं जो पारंपरिक रूप से millets का उत्पादन करते थे। वो इस बात से बहुत खुश हैं कि दुनिया अब millets का महत्व समझने लगी है। दूसरी तरफ, FPO और entrepreneurs ने millets को बाजार तक पहुँचाने और उसे लोगों तक उपलब्ध कराने के प्रयास शुरू कर दिए हैं।

आंध्र प्रदेश के नांदयाल जिले के रहने वाले के.वी. रामा सुब्बा रेड्डी जी ने millets के लिए अच्छी-खासी salary वाली नौकरी छोड़ दी। माँ के हाथों से बने millets के पकवानों का स्वाद कुछ ऐसा रचा-बसा था कि इन्होंने अपने गाँव में बाजरे की processing unit ही शुरू कर दी। सुब्बा रेड्डी जी लोगों को बाजरे के फायदे भी बताते हैं और उसे आसानी से उपलब्ध भी

कराते हैं। महाराष्ट्र में अलीबाग के पास केनाड गाँव की रहने वाली शर्मीला ओसवाल जी पिछले 20 साल से millets की पैदावार में unique तरीके से योगदान दे रही हैं। वो किसानों को smart agriculture की training दे रही हैं। उनके प्रयासों से न सिर्फ millets की उपज बढ़ी है, बल्कि, किसानों की आय में भी वृद्धि हुई है।

अगर आपको छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जाने का मौका मिले तो यहाँ के Millets Cafe जरूर जाइएगा। कुछ ही महीने पहले शुरू हुए इस Millets Cafe में चीला, डोसा, मोमोस, पिज़्ज़ा और मंचूरियन जैसे Item खूब popular हो रहे हैं।

मैं, आपसे एक और बात पूछूँ ? आपने entrepreneur शब्द सुना होगा, लेकिन, क्या आपने Milletpreneurs सुना है क्या ? ओडिशा की Milletpreneurs, आजकल खूब सुर्खियों में हैं। आदिवासी जिले सुंदरगढ़ की करीब डेढ़ हजार महिलाओं का Self Help Group, Odisha Millets Mission से जुड़ा हुआ है। यहाँ महिलाएं millets से cookies, रसगुल्ला, गुलाब जामुन और केक तक बना रही हैं। बाजार में इनकी खूब demand होने से महिलाओं की आमदनी भी बढ़ रही है।

कर्नाटका के कलबुर्गी में Aland Bhootai (अलंद भुताई) Millets Farmers Producer Company ने पिछले साल Indian Institute of Millets Research की देखरेख में काम शुरू किया। यहाँ के खाकरा, बिस्कुट और लड्डू लोगों को भा रहे हैं। कर्नाटका के ही बीदर जिले में, Hulsoor Millet Producer Company से जुड़ी महिलाएं millets की खेती के साथ ही उसका आटा भी तैयार कर रही हैं। इससे इनकी कमाई भी काफी बढ़ी है। प्राकृतिक खेती से जुड़े छत्तीसगढ़ के संदीप शर्मा जी के FPO से आज 12 राज्यों के किसान जुड़े हैं। बिलासपुर का यह FPO, 8 प्रकार के millets का आटा और उसके व्यंजन बना रहा है।

साथियों, आज हिंदुस्तान के कोने-कोने में G-20 की summits लगातार चल रही है और मुझे खुशी है कि देश के हर कोने में, जहाँ भी G-20 की summit हो रही है, millets से बने पौष्टिक, और स्वादिष्ट व्यंजन उसमें शामिल होते हैं। यहाँ बाजार से बनी खिचड़ी, पोहा, खीर और रोटी के साथ ही रागी से बने पायसम, पूड़ी और डोसा जैसे व्यंजन भी परोसे जाते हैं। G20 के सभी Venues पर Millets Exhibitions में Millets से बनी Health Drinks, Cereals (सीरियल्स) और Noodles को Showcase किया गया। दुनिया भर में Indian Missions भी इनकी लोकप्रियता बढ़ाने के लिए भरपूर प्रयास कर रहे हैं। आप कल्पना कर सकते हैं कि देश का ये प्रयास और दुनिया में बढ़ने वाली मिलेट्स (Millets) की डिमांड (demand), हमारे छोटे किसानों को कितनी ताकत देने वाली है। मुझे ये देखकर भी अच्छा लगता है कि आज जितने तरह की नई-नई चीज़ें मिलेट्स (Millets) से बनने लगी हैं, वो युवा पीढ़ी को भी उतनी ही पसंद आ रही है। International Year of Millets की ऐसी शानदार शुरुआत के लिए और उसको लगातार आगे बढ़ाने के लिए मैं 'मन की बात' के श्रोताओं को भी बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, जब आपसे कोई Tourist Hub गोवा की बात करता है, तो, आपके मन में क्या ख्याल आता है ? स्वभाविक है, गोवा का नाम आते ही, सबसे पहले, यहां की खूबसूरत Coastline, Beaches और पसंदीदा खानपान की बातें ध्यान में आने लगती हैं। लेकिन गोवा में इस महीने कुछ ऐसा हुआ, जो बहुत सुर्खियों में है। आज 'मन की बात' में, मैं इसे, आप सबके साथ साझा करना चाहता हूँ। गोवा में हुआ ये इवेंट (Event) है - Purple Fest (पर्पल फेस्ट) इस फेस्ट को 6 से 8 जनवरी तक पणजी में आयोजित किया गया। दिव्यांगजनों के कल्याण को लेकर यह अपने-आप में एक अनूठा प्रयास था। Purple Fest (पर्पल फेस्ट) कितना बड़ा मौका था, इसका अंदाजा आप सभी इस बात से लगा सकते हैं, कि 50 हजार से भी ज्यादा हमारे भाई-बहन इसमें शामिल हुए। यहां आये लोग इस बात को लेकर रोमांचित थे कि वो अब 'मीरामार बीच' घूमने का भरपूर आनंद उठा सकते हैं। दरअसल, 'मीरामार बीच' हमारे दिव्यांग भाई-बहनों के लिए गोवा के Accessible Beaches में से एक बन गया है। यहां पर Cricket Tournament, Table Tennis Tournament, Marathon Competition के साथ ही एक डीफ-ब्लाइंड कन्वेंशन भी आयोजित किया गया। यहाँ Unique Bird Watching Programme के अलावा एक फिल्म भी दिखाई गयी। इसके लिए विशेष इंतजाम किये गए थे, ताकि, हमारे सभी दिव्यांग भाई-बहन और बच्चे इसका पूरा आनंद ले सकें। Purple Fest की एक खास बात इसमें देश के private sector की भागीदारी भी रही। उनकी ओर से ऐसे products को showcase किया गया, जो, Divyang Friendly हैं। इस fest में दिव्यांग कल्याण के प्रति जागरूकता बढ़ाने के अनेक प्रयास देखे गए। Purple Fest को सफल बनाने के लिए, मैं, इसमें हिस्सा लेने वाले सभी लोगों को बधाई देता हूँ। इसके साथ ही उन Volunteers का भी अभिनन्दन करता हूँ, जिन्होंने इसे Organise करने के लिए रात-दिन एक कर दिया। मुझे पूरा विश्वास है कि Accessible India के हमारे Vision को साकार करने में इस प्रकार के अभियान बहुत ही कारगर साबित होंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, अब 'मन की बात' में, मैं, एक ऐसे विषय पर बात करूंगा जिसमें आपको आनंद भी आएगा, गर्व भी होगा और मन कह उठेगा – वाह भाई वाह ! दिल खुश हो गया ! देश के सबसे पुराने Science Institutions में से एक बेंगलुरु का Indian Institute of Science, यानी IISc एक शानदार मिसाल पेश कर रहा है। 'मन की बात' में, मैं, पहले इसकी चर्चा कर चुका हूं, कि कैसे, इस संस्थान की स्थापना के पीछे, भारत की दो महान विभूतियाँ, जमशेदजी टाटा और स्वामी विवेकानंद की प्रेरणा रही है, तो, आपको और मुझे आनंद और गर्व दिलाने वाली बात ये है कि साल 2022 में इस संस्थान के नाम कुल 145 patents रहे हैं। इसका मतलब है – हर पांच दिन में दो patents. ये रिकॉर्ड अपने आप में अद्भुत है। इस सफलता के लिए मैं IISc की टीम को भी बधाई देना चाहता हूं। साथियो, आज Patent Filing में भारत की ranking 7वीं और trademarks में 5वीं है। सिर्फ patents की बात करें, तो पिछले पांच वर्षों में इसमें करीब 50 प्रतिशत की वृद्धि हुई है। Global Innovation Index में भी, भारत की ranking में, जबरदस्त सुधार हुआ है और अब वो 40वें पर आ पहुंची है, जबकि 2015 में, भारत Global Innovation Index में 80 नंबर के भी पीछे था। एक और दिलचस्प बात मैं आपको बताना चाहता हूं। भारत में पिछले 11 वर्षों में पहली बार Domestic Patent Filing की संख्या Foreign Filing से अधिक देखी गई है। ये भारत के बढ़ते हुए वैज्ञानिक सामर्थ्य को भी दिखाता है।

साथियो, हम सभी जानते हैं कि 21वीं सदी की Global Economy में Knowledge ही सर्वोपरि है। मुझे विश्वास है कि भारत के Techade का सपना हमारे Innovators और उनके Patents के दम पर जरूर पूरा होगा। इससे हम सभी अपने ही देश में तैयार World Class Technology और Products का भरपूर लाभ ले सकेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, NaMoApp पर मैंने तेलंगाना के इंजीनियर विजय जी की एक Post देखी। इसमें विजयजी ने E-Waste के बारे में लिखा है। विजय जी का आग्रह है कि मैं 'मन की बात' में इस पर चर्चा करूं। इस कार्यक्रम में पहले भी हमने 'Waste to Wealth' यानी 'कचरे से कंचन' के बारे में बातें की हैं, लेकिन आइए, आज, इसी से जुड़ी E-Waste की चर्चा करते हैं।

साथियो, आज हर घर में Mobile Phone, Laptop, Tablet जैसी devices आम हो चली हैं। देशभर में इनकी संख्या Billions में होगी। आज के Latest Devices, भविष्य के E-Waste भी होते हैं। जब भी कोई नई device खरीदता है या फिर अपनी पुरानी device को बदलता है, तो यह ध्यान रखना जरूरी हो जाता है कि उसे सही तरीके से Discard किया जाता है या नहीं। अगर E-Waste को ठीक से Dispose नहीं किया गया, तो यह, हमारे पर्यावरण को भी नुकसान पहुंचा सकता है। लेकिन, अगर सावधानीपूर्वक ऐसा किया जाता है, तो, यह Recycle और Reuse की Circular Economy की बहुत बड़ी ताकत बन सकता है। संयुक्त राष्ट्र की एक Report में बताया गया था कि हर साल 50 मिलियन टन E-Waste फेंका जा रहा है। आप अंदाजा लगा सकते हैं कि कितना होता है? मानव इतिहास में जितने Commercial Plane बने हैं, उन सभी का वजन मिला दिया जाए, तो भी जितना E-Waste निकल रहा है, उसके बराबर, नहीं होगा। ये ऐसा है जैसे हर Second 800 Laptop फेंक दिए जा रहे हों। आप जानकर चौंक जाएंगे कि अलग-अलग Process के जरिए इस E-Waste से करीब 17 प्रकार के Precious Metal निकाले जा सकते हैं। इसमें Gold, Silver, Copper और Nickel शामिल हैं, इसलिए E-Waste का सदुपयोग करना, 'कचरे को कंचन' बनाने से कम नहीं है। आज ऐसे Start-Ups की कमी नहीं, जो इस दिशा में Innovative काम कर रहे हैं। आज, करीब 500 E-Waste Recyclers इस क्षेत्र से जुड़े हैं और बहुत सारे नए उद्यमियों को भी इससे जोड़ा जा रहा है। इस Sector ने हजारों लोगों को सीधे तौर पर रोजगार भी दिया है। बेंगलुरु की E-Parisaraa ऐसे ही एक प्रयास में जुटी है। इसने Printed Circuit Boards की कीमती धातुओं को अलग करके की स्वदेशी Technology विकसित की है। इसी तरह मुंबई में काम कर रही Ecoreco (इको-रीको) ने Mobile App से E-Waste को Collect करने का System तैयार किया है। उत्तराखंड के रुड़की की Attero (एटेरो) Recycling ने तो इस क्षेत्र में दुनियाभर में कई Patents हासिल किए हैं। इसने भी खुद की E-Waste Recycling Technology तैयार कर काफी नाम कमाया है। भोपाल में Mobile App और Website 'कबाड़ीवाला' के जरिए दोनों E-Waste एकत्रित किया जा रहा है। इस तरह के कई उदाहरण हैं। ये सभी भारत को Global Recycling Hub बनाने में मदद कर रहे हैं, लेकिन, ऐसे Initiatives की सफलता के लिए एक जरूरी शर्त भी है - वो ये है कि E-Waste के निपटारे से सुरक्षित उपयोगी तरीकों के बारे में लोगों को जागरूक करते रहना होगा। E-Waste के क्षेत्र में काम करने वाले बताते हैं कि अभी हर साल सिर्फ 15-17 प्रतिशत E-Waste को ही Recycle किया जा रहा है।



मेरे प्यारे देशवासियों, आज पूरी दुनिया में **Climate-change** और **Biodiversity** के संरक्षण की बहुत चर्चा होती है। इस दिशा में भारत के ठोस प्रयासों के बारे में हम लगातार बात करते रहे हैं। भारत ने अपने **wetlands** के लिए जो काम किया है, वो जानकर आपको भी बहुत अच्छा लगेगा। कुछ श्रोता सोच रहे होंगे कि **wetlands** क्या होता है ? **Wetland sites** यानी वो स्थान जहाँ दलदली मिट्टी जैसी जमीन पर साल-भर पानी जमा रहता है। कुछ दिन बाद, 2 फरवरी को ही **World Wetlands day** है। हमारी धरती के अस्तित्व के लिए **Wetlands** बहुत जरूरी हैं, क्योंकि इन पर, कई सारे पक्षी, जीव-जंतु निर्भर करते हैं। ये **Biodiversity** को समृद्ध करने के साथ **Flood control** और **Ground Water Recharge** को भी सुनिश्चित करते हैं। आप में से बहुत लोग जानते होंगे **Ramsar (रामसर) Sites** ऐसे **Wetlands** होते हैं, जो **International Importance** के हैं। **Wetlands** भले ही किसी देश में हो, लेकिन उन्हें, अनेक मापदंडों को पूरा करना होता है, तब जाकर उन्हें, **Ramsar Sites** घोषित किया जाता है। **Ramsar Sites** में 20,000 या उससे अधिक **water birds** होने चाहिए। स्थानीय मछली की प्रजातियों का बड़ी संख्या में होना जरूरी है। आजादी के 75 साल पर, अमृत महोत्सव के दौरान **Ramsar Sites** से जुड़ी एक अच्छी जानकारी भी मैं आपके साथ **share** करना चाहता हूँ। हमारे देश में अब **Ramsar Sites** की कुल संख्या 75 हो गयी है, जबकि, 2014 के पहले देश में सिर्फ 26 **Ramsar Sites** थी। इसके लिए स्थानीय समुदाय बधाई के पात्र हैं, जिन्होंने इस **Biodiversity** को संजोकर रखा है। यह प्रकृति के साथ सद्भावपूर्वक रहने की हमारी सदियों पुरानी संस्कृति और परंपरा का भी सम्मान है। भारत के ये **Wetlands** हमारे प्राकृतिक सामर्थ्य का भी उदाहरण हैं। ओडिशा की चिलका झील को 40 से अधिक **WaterBird Species** को आश्रय देने के लिए जाना जाता है। कईबुल-लमजाअ, लोकटाक को **Swamp Deer** का एकमात्र **Natural Habitat** (हैबिटेट) माना जाता है। तमिलनाडु के वेङ्थांगल को 2022 में **Ramsar Site** घोषित किया गया। यहाँ की **Bird Population** को संरक्षित करने का पूरा श्रेय आस-पास के किसानों को जाता है। कश्मीर में पंजाथ नाग समुदाय **Annual Fruit Blossom festival** के दौरान एक दिन को विशेष तौर पर गाँव के झरने की साफ़-सफाई में लगाता है। **World's Ramsar Sites** में अधिकतर **Unique Culture Heritage** भी हैं। मणिपुर का लोकटाक और पवित्र झील रेणुका से वहाँ की संस्कृतियों का गहरा जुड़ाव रहा है। इसी प्रकार **Sambhar** का नाता माँ दुर्गा के अवतार शाकम्भरी देवी से भी है। भारत में **Wetlands** का ये विस्तार उन लोगों की वजह से संभव हो पा रहा है, जो **Ramsar Sites** के आसपास रहते हैं। मैं, ऐसे सभी लोगों की बहुत सराहना करता हूँ, 'मन की बात' के श्रोताओं की तरफ से उन्हें शुभकामनाएं देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, इस बार हमारे देश में, खासकर उत्तर भारत में, खूब कड़ाके की सर्दी पड़ी। इस सर्दी में लोगों ने पहाड़ों पर बर्फबारी का मजा भी खूब लिया। जम्मू-कश्मीर से कुछ ऐसी तस्वीरें आईं जिन्होंने पूरे देश का मन मोह लिया। **Social Media** पर तो पूरी दुनिया के लोग इन तस्वीरों को पसंद कर रहे हैं। बर्फबारी की वजह से हमारी कश्मीर घाटी हर साल की तरह इस बार भी बहुत खूबसूरत हो गई है। बनिहाल से बडगाम जाने वाली ट्रेन की वीडियो को भी लोग खासकर पसंद कर रहे हैं। खूबसूरत बर्फबारी, चारों ओर सफ़ेद चादर सी बर्फ। लोग कह रहे हैं, कि ये दृश्य, परिलोक की कथाओं सा लग रहा है। कई लोग कह रहे हैं कि ये किसी विदेश की नहीं, बल्कि अपने ही देश में कश्मीर की तस्वीरें हैं।

एक **Social Media User** ने लिखा है – 'कि स्वर्ग इससे ज्यादा खूबसूरत और क्या होगा?' ये बात बिल्कुल सही है - तभी तो कश्मीर को धरती का स्वर्ग कहा जाता है। आप भी इन तस्वीरों को देखकर कश्मीर की सैर जाने का जरूर सोच रहे होंगे। मैं चाहूँगा, आप, खुद भी जाइए और अपने साथियों को भी ले जाइए। कश्मीर में बर्फ से ढके पहाड़, प्राकृतिक सौन्दर्य के साथ-साथ और भी बहुत कुछ देखने-जानने के लिए हैं। जैसे कि कश्मीर के सय्यदाबाद में **Winter games** आयोजित किए गए। इन **Games** की theme थी - **Snow Cricket** ! आप सोच रहे होंगे कि **Snow Cricket** तो ज्यादा ही रोमांचक खेल होगा - आप बिल्कुल सही सोच रहे हैं। कश्मीरी युवा बर्फ के बीच **Cricket** को और भी अद्भुत बना देते हैं। इसके जरिए कश्मीर में ऐसे युवा खिलाड़ियों की तलाश भी होती है, जो आगे चलकर टीम इंडिया के तौर पर खेलेंगे। ये भी एक तरह से **Khelo India Movement** का ही विस्तार है। कश्मीर में, युवाओं में, खेलों को लेकर, बहुत उत्साह बढ़ रहा है। आने वाले समय में इनमें से कई युवा, देश के लिए मेडल जीतेंगे, तिरंगा लहराएंगे। मेरा आपको सुझाव होगा कि अगली बार जब आप कश्मीर की यात्रा **plan** करें तो इन तरह के आयोजनों को देखने के लिए भी समय निकालें। ये अनुभव आपकी यात्रा को और भी यादगार बना देंगे।

मेरे प्यारे देशवासियों, गणतंत्र को मजबूत करने के हमारे प्रयास निरंतर चलते रहने चाहिए। गणतंत्र मजबूत होता है 'जन-भागीदारी से', 'सबका प्रयास से', 'देश के प्रति अपने-अपने कर्तव्यों को निभाने से', और मुझे संतोष है, कि, हमारा 'मन की बात', ऐसे कर्तव्यनिष्ठ सेनानियों की बुलंद आवाज है। अगली बार फिर से मुलाकात होगी ऐसे कर्तव्यनिष्ठ लोगों की दिलचस्प

और प्रेरक गाथाओं के साथ। बहुत-बहुत धन्यवाद।

\*\*\*\*\*

**DS/TS/VK**

(रिलीज आईडी: 1894438) आगंतुक पटल : 655

प्रधानमंत्री कार्यालय



## मन की बात की 98वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (26.02.2023)

प्रविष्टि तिथि: 26 FEB 2023 11:33AM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। 'मन की बात' के इस 98वें एपिसोड में आप सभी के साथ जुड़कर मुझे बहुत खुशी हो रही है। century की तरफ बढ़ते इस सफर में, 'मन की बात' को, आप सभी ने, जनभागीदारी की अभिव्यक्ति का, अद्भुत platform बना दिया है। हर महीने, लाखों सदशों में, कितने ही लोगों के 'मन की बात' मुझ तक पहुँचती है। आप, अपने मन की शक्ति तो जानते ही हैं, वैसे ही, समाज की शक्ति से कैसे देश की शक्ति बढ़ती है, ये हमने 'मन की बात' के अलग-अलग Episodes में देखा है, समझा है, और मैंने अनुभव किया है - स्वीकार भी किया है। मुझे वो दिन याद है, जब हमने 'मन की बात' में भारत के पारंपरिक खेलों को प्रोत्साहन की बात की थी। तुरंत उस समय देश में एक लहर सी उठ गई भारतीय खेलों के जुड़ने की, इनमें रमने की, इन्हें सीखने की। 'मन की बात' में, जब, भारतीय खिलौनों की बात हुई, तो देश के लोगों ने, इसे भी, हाथों-हाथ बढ़ावा दे दिया। अब तो भारतीय खिलौनों का इतना craze हो गया है, कि, विदेशों में भी इनकी demand बहुत बढ़ रही है। जब 'मन की बात' में हमने story-telling की भारतीय विधाओं पर बात की, तो इनकी प्रसिद्धि भी, दूर-दूर तक पहुँच गई। लोग, ज्यादा से ज्यादा भारतीय story-telling की विधाओं की तरफ आकर्षित होने लगे।

साथियो, आपको याद होगा सरदार पटेल की जयन्ती यानी 'एकता दिवस' के अवसर पर 'मन की बात' में हमने तीन competitions की बात की थी। ये प्रतियोगिताएं, देशभक्ति पर 'गीत', 'लोरी' और 'रंगोली' इससे जुड़ी थीं। मुझे, यह बताते हुए खुशी है, देशभर के 700 से अधिक जिलों के 5 लाख से अधिक लोगों ने बढ़-चढ़ कर इसमें हिस्सा लिया है। बच्चे, बड़े, बुजुर्ग, सभी ने, इसमें, बढ़-चढ़कर भागीदारी की और 20 से अधिक भाषाओं में अपनी entries भेजी हैं। इन competitions में भाग लेने वाले सभी प्रतिभागियों को मेरी ओर से बहुत-बहुत बधाई है। आपमें से हर कोई, अपने आप में, एक champion है, कला साधक है। आप सभी ने यह दिखाया है, कि, अपने देश की विविधता और संस्कृति के लिए आपके हृदय में कितना प्रेम है।

साथियो, आज इस मौके पर मुझे लता मंगेशकर जी, लता दीदी की याद आना बहुत स्वाभाविक है। क्योंकि जब ये प्रतियोगिता प्रारंभ हुई थी, उस दिन लता दीदी ने tweet करके देशवासियों से आग्रह किया था कि वे इस प्रथा में जरूर जुड़ें।

साथियो, लोरी writing competition में, पहला पुरस्कार, कर्नाटक के चामराजनगर जिले के बी.एम. मंजूनाथ जी ने जीता है। इन्हें ये पुरस्कार कन्नड़ में लिखी उनकी लोरी 'मलगू कन्दा' (Malagu Kanda) के लिए मिला है। इसे लिखने की प्रेरणा इन्हें अपनी माँ और दादी के गाए लोरी-गीतों से मिली। आप इसे सुनेंगे तो आपको भी आनंद आएगा।

(Kannad Sound Clip (35 seconds) HINDI Translation)

“सो जाओ, सो जाओ, बेबी,  
मेरे समझदार लाडले, सो जाओ,  
दिन चला गया है और अन्धेरा है,  
निद्रा देवी आ जायेगी,  
सितारों के बाग से,

सपने काट लायेगी,  
सो जाओ, सो जाओ,  
जोजो...जो..जो..  
जोजो...जो..जो..”

असम में कामरूप जिले के रहने वाले दिनेश गोवाला जी ने इस प्रतियोगिता में **second prize** जीता है। इन्होंने जो लोरी लिखी है, उसमें स्थानीय मिट्टी और **metal** के बर्तन बनाने वाले कारीगरों के **popular craft** की छाप है।

(Assamese Sound Clip (35 seconds) HINDI Translation)

कुम्हार दादा झोला लेकर आये हैं,  
झोले में भला क्या है?  
खोलकर देखा कुम्हार के झोले को तो,  
झोले में थी प्यारी सी कटोरी!  
हमारी गुड़िया ने कुम्हार से पूछा,  
कैसी है ये छोटी सी कटोरी!

गीतों और लोरी की तरह ही **Rangoli Competition** भी काफी लोकप्रिय रहा। इसमें हिस्सा लेने वालों ने एक से बढ़कर एक सुन्दर रंगोली बनाकर भेजी। इसमें **winning entry**, पंजाब के, कमल कुमार जी की रही। इन्होंने नेताजी सुभाष चन्द्र बोस और अमर शहीद वीर भगत सिंह की बहुत ही सुन्दर रंगोली बनाई। महाराष्ट्र के सांगली के सचिन नरेंद्र अवसारी जी ने अपनी रंगोली में जलियांवाला बाग, उसका नरसंहार और शहीद उधम सिंह की बहादुरी को प्रदर्शित किया। गोवा के रहने वाले गुरुदत्त वान्तेकर जी ने गांधी जी की रंगोली बनाई, जबकि पुदुचेरी के मालातिसेल्वम जी ने भी आजादी के कई महान सेनानियों पर अपना **focus** रखा। देशभक्ति गीत प्रतियोगिता की विजेता, टी. विजय दुर्गा जी आन्ध्र प्रदेश की हैं। उन्होंने, तेलुगु में अपनी **entry** भेजी थी। वे अपने क्षेत्र के प्रसिद्ध स्वतंत्रता सेनानी नरसिम्हा रेड्डी गारु जी से काफी प्रेरित रही हैं। आप भी सुनिये विजय दुर्गा जी की **entry** का यह हिस्सा

(Telugu Sound Clip (27 seconds) HINDI Translation)

रेनाडू प्रांत के सूरज,  
हे वीर नरसिंह!  
भारतीय स्वतंत्रता संग्राम के अंकुर हो, अंकुश हो!  
अंग्रेजों के न्याय रहित निरंकुश दमन कांड को देख  
खून तेरा सुलगा और आग उगला!  
रेनाडू प्रांत के सूरज,  
हे वीर नरसिंह!

तेलुगु के बाद, अब मैं, आपको, मैथिली में एक **clip** सुनाता हूँ। इसे दीपक वत्स जी ने भेजा है। उन्होंने भी इस प्रतियोगिता में पुरस्कार जीता है।

(Maithili Sound Clip (30 seconds) HINDI Translation)

भारत दुनियाँ की शान है भैया,  
अपना देश महान है,



तीन दिशा समुन्द्र से घिरा,  
 उत्तर में कैलाश बलवान है,  
 गंगा, यमुना, कृष्णा, कावेरी,  
 कोशी, कमला बलान है,  
 अपना देश महान है भैया,  
 तिरंगे में बसा प्राण है

साथियो, मुझे उम्मीद है, आपको ये पसंद आई होगी। प्रतियोगिता में आयी इस तरह की **entries** की **list** बहुत लम्बी है। आप, संस्कृति मंत्रालय की वेबसाईट पर जाकर, इन्हें, अपने परिवार के साथ देखें और सुनें - आपको बहुत प्रेरणा मिलेगी।

मेरे प्यारे देशवासियो, बात बनारस की हो, शहनाई की हो, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान जी की हो, तो, स्वाभाविक है कि मेरा ध्यान उस तरफ जाएगा ही। कुछ दिन पहले 'उस्ताद बिस्मिल्लाह खान युवा पुरस्कार' दिए गए। ये पुरस्कार **music** और **performing arts** के क्षेत्र में उभर रहे, प्रतिभाशाली कलाकारों को दिए जाते हैं। ये कला और संगीत जगत की लोकप्रियता बढ़ाने के साथ ही इसकी समृद्धि में अपना योगदान दे रहे हैं। इनमें, वे कलाकार भी शामिल हैं, जिन्होंने, उन **instruments** में नई जान फूँकी है, जिनकी **popularity** समय के साथ कम होती जा रही थी। अब, आप सभी इस **tune** को ध्यान से सुनिए ...

(Sound Clip (21 seconds) Instrument- 'सुरसिंगार', Artist -जॉयदीप मुखर्जी)

क्या आप जानते हैं ये कौन सा **instrument** है ? संभव है आपको पता न भी हो! इस वाद्यमंत्र का नाम 'सुरसिंगार' है और इस धुन को तैयार किया है जॉयदीप मुखर्जी ने। जॉयदीप जी, उस्ताद बिस्मिल्लाह खान पुरस्कार से सम्मानित युवाओं में शामिल हैं। इस **instrument** की धुनों को सुनना पिछले 50 और 60 के दशक से ही दुर्लभ हो चुका था, लेकिन, जॉयदीप, सुरसिंगार को फिर से **Popular** बनाने में जी-जान से जुटे हैं। उसी प्रकार बहन उप्पलपू नागमणि जी का प्रयास भी बहुत ही प्रेरक है, जिन्हें **Mandolin** में **Carnatic Instrumental** के लिए यह पुरस्कार दिया गया है। वहीं, संग्राम सिंह सुहास भंडारे जी को वारकरी कीर्तन के लिए यह पुरस्कार मिला है। इस **list** में सिर्फ संगीत से जुड़े कलाकार ही नहीं है - वी दुर्गा देवी जी ने, नृत्य की एक प्राचीन शैली, 'करकट्टम' के लिए यह पुरस्कार जीता है। इस पुरस्कार के एक और विजेता, राज कुमार नायक जी ने, तेलंगाना के 31 जिलों में, 101 दिन तक चलने वाली पेरिनी ओडिसी का आयोजन किया था। आज, लोग, इन्हें, पेरिनी राजकुमार के नाम से जानने लगे हैं। पेरिनी नाट्यम, भगवान शिव को समर्पित एक नृत्य है, जो काकतीय **Dynasty** के दौर में काफी लोकप्रिय था। इस **Dynasty** की जड़ें आज के तेलंगाना से जुड़ी हैं। एक अन्य पुरस्कार विजेता साइखौम सुरचंद्रा सिंह जी हैं। ये मैतेई पुंग **Instrument** बनाने में अपनी महारत के लिए जाने जाते हैं। इस **Instrument** का मणिपुर से नाता है। पूरन सिंह एक दिव्यांग कलाकार हैं, जो, राजूला-मलुशाही, न्यौली, हुड़का बोल, जागर जैसी विभिन्न **Music Forms** को लोकप्रिय बना रहे हैं। इन्होंने इनसे जुड़ी कई **Audio Recordings** भी तैयार की हैं। उत्तराखंड के **Folk Music** में अपनी प्रतिभा का प्रदर्शन कर पूरन सिंह जी ने कई पुरस्कार भी जीते हैं। समय की सीमा के चलते, मैं, यहाँ, सभी **Awardees** की बातें भले न कर पाऊँ, लेकिन मुझे विश्वास है कि, आप, उनके बारे में जरूर पढ़ेंगे। मुझे उम्मीद है, कि, ये सभी कलाकार, **Performing Arts** को और **Popular** बनाने के लिए **Grassroots** पर सभी को प्रेरित करते रहेंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, तेजी से आगे बढ़ते हमारे देश में **Digital India** की ताकत कोने-कोने में दिख रही है। **Digital India** की शक्ति को घर-घर पहुँचाने में अलग-अलग **Apps** की बड़ी भूमिका होती है। ऐसा ही एक **App** है, **E-Sanjeevani**। इस **App** से **Tele-consultation**, यानी, दूर बैठे, **video conference** के माध्यम से, डॉक्टर से, अपनी बीमारी के बारे में सलाह कर सकते हैं। इस **App** का उपयोग करके अब तक **Tele-consultation** करने वालों की संख्या 10 करोड़ के आंकड़े को पार कर गई है। आप कल्पना कर सकते हैं। **video conference** के माध्यम से 10 करोड़ **Consultations**! मरीज और डॉक्टर के साथ अद्भुत नाता - ये बहुत बड़ी **achievement** है। इस उपलब्धि के लिए, मैं, सभी डॉक्टरों और इस सुविधा का लाभ उठाने वाले मरीजों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। भारत के लोगों ने, तकनीक को, कैसे, अपने जीवन का हिस्सा बनाया है, ये इसका जीता-जागता उदाहरण है। हमने देखा है कि कोरोना के काल में **E-Sanjeevani App** इसके

जरिए **Tele-consultation** लोगों के लिए एक बड़ा वरदान साबित हुआ है। मेरा भी मन हुआ, कि क्यों ना इसके बारे में 'मन की बात' में हम एक डॉक्टर और एक मरीज से बात करें, संवाद करें और आप तक बात को पहुंचाएं। हम ये जानने की कोशिश करें कि, **Tele-consultation**, लोगों के लिए, आखिर, कितना प्रभावी रहा है। हमारे साथ सिक्किम से डॉक्टर मदन मणि जी हैं। डॉक्टर मदन मणि जी रहने वाले सिक्किम के ही हैं, लेकिन उन्होंने **MBBS** धनबाद से किया और फिर **Banaras Hindu University** से **MD** किया। वो ग्रामीण इलाकों के सैकड़ों लोगों को **Tele-consultation** दे चुके हैं।

प्रधानमंत्री जी: नमस्कार... नमस्कार मदन मणि जी।

डॉ. मदन मणि: जी नमस्कार सर।

प्रधानमंत्री जी: मैं नरेन्द्र मोदी बोल रहा हूँ।

डॉ. मदन मणि: जी... जी सर।

प्रधानमंत्री जी: आप तो बनारस में पढ़े हैं।

डॉ. मदन मणि: जी मैं बनारस में पढ़ा हूँ सर।

प्रधानमंत्री जी: आपका **medical education** वहीं हुआ।

डॉ. मदन मणि: जी... जी।

प्रधानमंत्री जी: तो जब आप बनारस में थे तब का बनारस और आज बदला हुआ बनारस कभी देखने गए कि नहीं गए।

डॉ. मदन मणि: जी प्रधानमंत्री जी मैं जा नहीं पाया हूँ, जबसे मैं वापस सिक्किम आया हूँ, लेकिन मैंने सुना है कि काफी बदल गया है।

प्रधानमंत्री जी: तो कितने साल हो गए आपको बनारस छोड़े ?

डॉ. मदन मणि: बनारस 2006 से छोड़ा हुआ हूँ सर।

प्रधानमंत्री जी: ओह... फिर तो आपको जरूर जाना चाहिए।

डॉ. मदन मणि: जी... जी।

प्रधानमंत्री जी: अच्छा, मैंने फ़ोन तो इसलिए किया कि आप सिक्किम के अंदर दूर-सुदूर पहाड़ों में रहकर के वहाँ के लोगों को **Tele Consultation** का बहुत बड़ी सेवाएँ दे रहे हैं।

डॉ. मदन मणि: जी।

प्रधानमंत्री जी: मैं 'मन की बात' के श्रोताओं को आपका अनुभव सुनाना चाहता हूँ।

डॉ. मदन मणि: जी।

प्रधानमंत्री जी: जरा मुझे बताइए, कैसा अनुभव रहा ?

डॉ. मदन मणि: अनुभव, बहुत बढ़िया रहा प्रधानमंत्री जी। क्या है कि सिक्किम में बहुत नजदीक का जो **PHC** है, वहाँ जाने के लिए भी लोगों को गाड़ी में चढ़ के कम-से-कम एक-दो सौ रुपया ले के जाना पड़ता है। और डॉक्टर मिले, नहीं मिले ये भी एक **problem** है। तो **Tele Consultation** के माध्यम से लोग हम लोग से सीधे जुड़ जाते हैं, दूर-दराज के लोग। **Health & Wellness Centre** के जो **CHOs** होते हैं, वो लोग, हम लोग से, **connect** करवा देते हैं। और हम लोग का जो पुरानी उनकी बीमारी है उनकी **reports**, उनका अभी का **present condition** सारी चीज़ें वो हम लोग को बता देते हैं।

प्रधानमंत्री जी: यानि **document transfer** करते हैं।

डॉ. मदन मणि: जी.. जी। Document transfer भी करते हैं और अगर transfer नहीं कर सके तो वो पढ़ के हम लोगों को बताते हैं।

प्रधानमंत्री जी: वहाँ का Wellness Centre का doctor बताता है।

डॉ. मदन मणि: जी, Wellness Centre में जो CHO रहता है, Community Health Officer।

प्रधानमंत्री जी: और जो patient है वो अपनी कठिनाईयाँ आपको सीधी बताता है।

डॉ. मदन मणि: जी, patient भी कठिनाईयाँ हम को बताता है। फिर पुराने records देख के फिर अगर कोई नई चीज़ें हम लोगों को जानना है। जैसे किसी का Chest Auscultate करना है, अगर उनको पैर सूजा है कि नहीं ? अगर CHO ने नहीं देखा है तो हम लोग उसको बोलते हैं कि जाके देखो सूजन है, नहीं है, आँख देखो, anaemia है कि नहीं है, उसका अगर खाँसी है तो Chest को Auscultate करो और पता करो कि वहाँ पे sounds है कि नहीं।

प्रधानमंत्री जी: आप Voice Call से बात करते हैं या Video Call का भी उपयोग करते हैं ?

डॉ. मदन मणि: जी, Video Call का उपयोग करते हैं।

प्रधानमंत्री जी: तो आप Patient को भी, आप भी देखते हैं।

डॉ. मदन मणि: Patient को भी देख पाते हैं, जी।

प्रधानमंत्री जी: Patient को क्या feeling आता है ?

डॉ. मदन मणि: Patient को अच्छा लगता है क्योंकि डॉक्टर को नज़दीक से वो देख पाता है। उसको confusion रहता है कि उसका दवा घटाना है, बढ़ाना है, क्योंकि, सिक्किम में ज्यादातर जो patient होते हैं, वो, diabetes, Hypertension के आते हैं और एक diabetes और hypertension के दवा को change करने के लिये उसको डॉक्टर मिलने के लिए कितना दूर जाना पड़ता है। लेकिन Tele Consultation के through वहीं मिल जाता है और दवा भी health & Wellness Centre में Free Drugs initiative के through मिल जाता है। तो वहीं से दवा भी लेके जाता है वो।

प्रधानमंत्री जी: अच्छा मदन मणि जी, आप तो जानते ही हैं कि patient का एक स्वभाव रहता है कि जब तक वो डॉक्टर आता नहीं है, डॉक्टर देखता नहीं है, उसको संतोष नहीं होता है और डॉक्टर को भी लगता है जरा मरीज को देखना पड़ेगा, अब वहाँ सारा ही Telecom में Consultation होता है तो डॉक्टर को क्या feel होता है, patient को क्या feel होता है ?

डॉ. मदन मणि: जी, वो हम लोग को भी लगता है कि अगर patient को लगता है कि डॉक्टर को देखना चाहिए, तो हम लोग को, जो-जो चीज़ें देखना है, वो, हम लोग, CHO को बोल के, video में ही हम लोग देखने के लिए बोलते हैं। और कभी-कभी तो patient को video में ही नज़दीक में आ के उसकी जो परेशानियाँ है अगर किसी को चर्म का problem है, skin का problem है तो वो हम लोग को video से ही दिखा देते हैं। तो संतुष्टि रहता है उन लोगों को।

प्रधानमंत्री जी: और बाद में उसका उपचार करने के बाद उसको संतोष मिलता है, क्या अनुभव आता है ? Patient ठीक हो रहे हैं?

डॉ. मदन मणि: जी, बहुत संतोष मिलता है। हमको भी संतोष मिलता है सर। क्योंकि मैं अभी स्वास्थ्य विभाग में हूँ और साथ-साथ में Tele Consultation भी करता हूँ तो file के साथ-साथ patient को भी देखना मेरे लिए बहुत अच्छा, सुखद अनुभव रहता है।

प्रधानमंत्री जी: Average, कितने patient आपको Tele Consultation case आते होंगे ?

डॉ. मदन मणि: अभी तक मैंने 536 patient देखे हैं।

प्रधानमंत्री जी: ओह... यानि आपको काफी इसमें महारथ आ गई है।

डॉ. मदन मणि: जी, अच्छा लगता है देखने में।

प्रधानमंत्री जी: चलिए, मैं आपको शुभकामनाएँ देता हूँ। इस Technology का उपयोग करते हुए आप सिक्किम के दूर-सुदूर जंगलों में, पहाड़ों में रहने वाले लोगों की इतनी बड़ी सेवा कर रहे हैं। और खुशी की बात है कि हमारे देश के दूर-दराज क्षेत्र में भी technology का इतना बढ़िया उपयोग हो रहा है। चलिए, मेरी तरफ से आपको बहुत-बहुत बधाई।

डॉ. मदन मणि: Thank You!

साथियो, डॉक्टर मदन मणि जी की बातों से साफ़ है कि E-Sanjeevani App, किस तरह उनकी मदद कर रहा है। डॉक्टर मदन जी के बाद अब हम एक और मदन जी से जुड़ते हैं। ये उत्तर प्रदेश के चंदौली जिले के रहने वाले मदन मोहन लाल जी हैं। अब ये भी संयोग है कि चंदौली भी बनारस से सटा हुआ है। आइये मदन मोहन जी से जानते हैं कि E-Sanjeevani को लेकर एक मरीज के रूप में उनका अनुभव क्या रहा है ?

प्रधानमंत्री जी: मदन मोहन जी, प्रणाम !

मदन मोहन जी: नमस्कार, नमस्कार साहब।

प्रधानमंत्री जी: नमस्कार! अच्छा, मुझे बताया गया है कि आप diabetes के मरीज हैं।

मदन मोहन जी: जी।

प्रधानमंत्री जी: और आप technology का उपयोग करके Tele-Consultation कर-कर के अपनी बीमारी के संबंध में मदद लेते हैं।

मदन मोहन जी: जी।

प्रधानमंत्री जी: एक patient के नाते, एक दर्दी के रूप में, मैं, आपके अनुभव सुनना चाहता हूँ, ताकि, मैं, देशवासियों तक इस बात को पहुँचाना चाहूँ कि आज की technology से हमारे गाँव में रहने वाले लोग भी किस प्रकार से इसका उपयोग भी कर सकते हैं। जरा बताइये कैसे करते हैं ?

मदन मोहन जी: ऐसा है सर जी, हॉस्पिटलें दूर हैं और जब diabetes हमको हुआ तो हम को जो है 5-6 किलोमीटर दूर जा कर के इलाज करवाना पड़ता था, दिखाना पड़ता था। और जब से व्यवस्था आप द्वारा बनाई गई है। इसे है कि हम अब जाता हूँ, हमारा जांच होता है, हमको बाहर के डॉक्टरों से बात भी करा देती हैं और दवा भी दे देती हैं। इससे हमको बड़ा लाभ है और, और लोगों को भी लाभ है इससे।

प्रधानमंत्री जी: तो एक ही डॉक्टर हर बार आपको देखते हैं कि डॉक्टर बदलते जाते है ?

मदन मोहन जी: जैसे उनको नहीं समझ, डॉक्टर को दिखा देती हैं। वो ही बात करके दूसरे डॉक्टर से हमसे बात कराती हैं।

प्रधानमंत्री जी: और डॉक्टर आपको जो guidance देते हैं वो आपको पूरा फायदा होता है उससे।

मदन मोहन जी: हमको फायदा होता है। हमको उससे बहुत बड़ा फायदा है। और गाँव के लोगों को भी फायदा उससे है। सभी लोग वहाँ पूछते हैं कि भईया हमारा BP है, हमारा sugar है, test करो, जांच करो, दवा बताओ। और पहले तो 5-6 किलोमीटर दूर जाते थे, लम्बी लाइन लगी रहती थी, Pathology में लाइन लगी रहती थी। एक-एक दिन का समय नुकसान होता था।

प्रधानमंत्री जी: मतलब, आपका समय भी बच जाता है।

मदन मोहन जी: और पैसा भी व्यय होता था और यहाँ पर निःशुल्क सेवाएँ सब हो रही हैं।

प्रधानमंत्री जी: अच्छा, जब आप अपने सामने डॉक्टर को मिलते हैं तो एक विश्वास बनता है। चलो भई, डॉक्टर है, उन्होंने मेरी नाड़ी देख ली है, मेरी आँखें देख ली है, मेरा जीभ को भी check कर लिया है। तो एक अलग feeling आता है। अब ये Tele Consultation करते हैं तो वैसा ही संतोष होता है आपको ?

मदन मोहन जी: हाँ, संतोष होता है। के वो हमारी नाड़ी पकड़ रहे हैं, आला लगा रहे हैं, ऐसा मुझे महसूस होता है और हमको बड़ा तबीयत खुश होती है कि भई इतनी अच्छी व्यवस्था आप द्वारा बनाई गई है कि जिससे कि हमको यहाँ परेशानी से जाना पड़ता था, गाड़ी का भाड़ा देना पड़ता था, वहाँ लाईन लगाना पड़ता था। और सारी सुविधाएँ हमको घर बैठे-बैठे मिल रही हैं।

प्रधानमंत्री जी: चलिए, मदन मोहन जी मेरी तरफ से आपको बहुत शुभकामनाएँ हैं। उम्र के इस पड़ाव पर भी आप technology को सीखे हैं, technology का उपयोग करते हैं। औरों को भी बताइए ताकि लोगों का समय भी बच जाए, धन भी बच जाए और उनको जो भी मार्गदर्शन मिलता है उससे दवाईयाँ भी अच्छे ढंग से हो सकती हैं।

मदन मोहन जी: हाँ, और क्या।

प्रधानमंत्री जी: चलिए, मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएँ हैं आपको मदन मोहन जी।

मदन मोहन जी: बनारस को साहब आपने काशी विश्वनाथ स्टेशन बना दिया, development कर दिया। ये आपको बधाई है हमारी तरफ से।

प्रधानमंत्री जी: मैं आपका धन्यवाद करता हूँ। हमने क्या बनाया जी, बनारस के लोगों ने बनारस को बनाया है। नहीं तो, हम तो माँ गंगा की सेवा के लिए, माँ गंगा ने बुलाया है, बस, और कुछ नहीं। ठीक है जी, बहुत-बहुत शुभकामनाएँ आपको। प्रणाम जी।

मदन मोहन जी: नमस्कार सर !

प्रधानमंत्री जी: नमस्कार जी !

साथियो, देश के सामान्य मानवी के लिए, मध्यम वर्ग के लिए, पहाड़ी क्षेत्रों में रहने वालों के लिए, E-Sanjeevani, जीवन रक्षा करने वाला App बन रहा है। ये है भारत की digital क्रान्ति की शक्ति। और इसका प्रभाव आज हम हर क्षेत्र में देख रहे हैं। भारत के UPI की ताकत भी आप जानते ही हैं। दुनिया के कितने ही देश, इसकी तरफ आकर्षित हैं। कुछ दिन पहले ही भारत और सिंगापुर के बीच UPI-Pay Now Link launch किया गया। अब, सिंगापुर और भारत के लोग, अपने मोबाईल फ़ोन से उसी तरह पैसे transfer कर रहे हैं जैसे वे अपने-अपने देश के अन्दर करते हैं। मुझे खुशी है कि लोगों ने इसका लाभ उठाना शुरू कर दिया है। भारत का E-Sanjeevani App हो या फिर UPI, ये Ease of Livingको बढ़ाने में बहुत मददगार साबित हुए हैं।

मेरे प्यारे देशवासियो, जब किसी देश में विलुप्त हो रहे किसी पक्षी की प्रजाति को, किसी जीव-जंतु को बचा लिया जाता है, तो उसकी पूरी दुनिया में चर्चा होती है। हमारे देश में ऐसी अनेकों महान परम्पराएँ भी हैं जो लुप्त हो चुकी थी, लोगों के मन-मस्तिष्क से हट चुकी थी, लेकिन अब इन्हें जनभागीदारी की शक्ति से पुनर्जीवित करने का प्रयास हो रहा है तो इसकी चर्चा के लिए 'मन की बात' से बेहतर मंच और क्या होगा ?

अब जो मैं आपको बताने जा रहा हूँ, वो जानकर वाकई आपको बहुत प्रसन्नता होगी, विरासत पर गर्व होगा। अमेरिका में रहने वाले श्रीमान कंचन बैनर्जी ने विरासत के संरक्षण से जुड़े ऐसे ही एक अभियान की तरफ मेरा ध्यान आकर्षित किया है। मैं उनका अभिनंदन करता हूँ। साथियो, पश्चिम बंगाल में हुगली जिले के बांसबेरिया में, इस महीने, 'त्रिबेनी कुम्भो मोहोत्सव' का आयोजन किया गया। इसमें आठ लाख से ज्यादा श्रद्धालु शामिल हुए लेकिन क्या आप जानते हैं कि यह इतना विशेष क्यों है? विशेष इसलिए, क्योंकि, इस प्रथा को 700 साल के बाद पुनर्जीवित किया गया है। यूं तो ये परंपरा हजारों वर्ष पुरानी है लेकिन



दुर्भाग्य से 700 साल पहले बंगाल के त्रिबेनी में होने वाला ये महोत्सव बंद हो गया था। इसे आजादी के बाद शुरू किया जाना चाहिए था, लेकिन, वो भी नहीं हो पाया। दो वर्ष पहले, स्थानीय लोग और 'त्रिबेनी कुंभो पौरिचालोना शॉमिति' के माध्यम से, ये महोत्सव, फिर शुरू हुआ है। मैं इसके आयोजन से जुड़े सभी लोगों को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। आप, सिर्फ एक परंपरा को ही जीवित नहीं कर रहे हैं, बल्कि आप, भारत की सांस्कृतिक विरासत की भी रक्षा भी कर रहे हैं।

साथियों, पश्चिम बंगाल में त्रिबेनी को सदियों से एक पवित्र स्थल के रूप में जाना जाता है। इसका उल्लेख, विभिन्न मंगलकाव्य, वैष्णव साहित्य, शाक्त साहित्य और अन्य बंगाली साहित्यिक कृतियों में भी मिलता है। विभिन्न ऐतिहासिक दस्तावेजों से यह पता चलता है, कि, कभी ये क्षेत्र, संस्कृत, शिक्षा और भारतीय संस्कृति का केंद्र था। कई संत इसे माघ संक्रांति में कुंभ स्नान के लिए पवित्र स्थान मानते हैं। त्रिबेनी में आपको कई गंगा घाट, शिव मंदिर और टेराकोटा वास्तुकला से सजी प्राचीन इमारतें देखने को मिल जाएंगी। त्रिबेनी की विरासत को पुनर्स्थापित करने और कुंभ परंपरा के गौरव को पुनर्जीवित करने के लिए यहां पिछले साल कुंभ मेले का आयोजन किया गया था। सात सदियों बाद, तीन दिन के कुंभ महास्नान और मेले ने, इस क्षेत्र में, एक नई ऊर्जा का संचार किया है। तीन दिनों तक हर रोज होने वाली गंगा आरती, रुद्राभिषेक और यज्ञ में बड़ी संख्या में लोग शामिल हुए। इस बार हुए महोत्सव में विभिन्न आश्रम, मठ और अखाड़े भी शामिल थे। बंगाली परंपराओं से जुड़ी विभिन्न विधाएं जैसे कीर्तन, बाउल, गोड़ियों नृत्यों, स्त्री-खोल, पोटेर गान, छोऊ-नाच, शाम के कार्यक्रमों में, आकर्षण का केंद्र बने थे। हमारे युवाओं को देश के सुनहरे अतीत से जोड़ने का यह एक बहुत ही सराहनीय प्रयास है। भारत में ऐसी कई और **practices** हैं, जिन्हें **revive** करने की जरूरत है। मुझे आशा है, कि, इनके बारे में होने वाली चर्चा, लोगों को इस दिशा में जरूर प्रेरित करेगी।

मेरे प्यारे देशवासियों, स्वच्छ भारत अभियान में हमारे देश में जन भागीदारी के मायने ही बदल दिए हैं। देश में कहीं पर भी कुछ स्वच्छता से जुड़ा हुआ होता है, तो लोग इसकी जानकारी मुझ तक जरूर पहुंचाते हैं। ऐसे ही मेरा ध्यान गया है, हरियाणा के युवाओं के एक स्वच्छता अभियान पर। हरियाणा में एक गाँव है – दुल्हेड़ी। यहाँ के युवाओं ने तय किया हमें भिवानी शहर को स्वच्छता के मामले में एक मिसाल बनाना है। उन्होंने युवा स्वच्छता एवं जन सेवा समिति नाम से एक संगठन बनाया। इस समिति से जुड़े युवा सुबह 4 बजे भिवानी पहुँच जाते हैं। शहर के अलग-अलग स्थलों पर ये मिलकर सफाई अभियान चलाते हैं। ये लोग अब तक शहर के अलग-अलग इलाकों से कई टन कूड़ा साफ़ कर चुके हैं।

साथियों, स्वच्छ भारत अभियान का एक महत्वपूर्ण आयाम वेस्ट टू वेल्थ (**Waste to Wealth**) भी है। ओडिशा के केंद्रपाड़ा जिले की एक बहन कमला मोहराना एक स्वयं सहायता समूह चलाती हैं। इस समूह की महिलाएं दूध की थैली और दूसरी प्लास्टिक पैकिंग से टोकरी और मोबाइल स्टैंड जैसी कई चीजें बनाती हैं। ये इनके लिए स्वच्छता के साथ ही आमदनी का भी एक अच्छा जरिया बन रहा है। हम अगर ठान लें तो स्वच्छ भारत में अपना बहुत बड़ा योगदान दे सकते हैं। कम-से-कम प्लास्टिक के बैग की जगह कपड़े के बैग का संकल्प तो हम सबको ही लेना चाहिए। आप देखेंगे, आपका ये संकल्प आपको कितना सन्तोष देगा, और दूसरे लोगों को ज़रूर प्रेरित करेगा।

मेरे प्यारे देशवासियों, आज हमने और आपने साथ जुड़कर एक बार फिर कई प्रेरणादायी विषयों पर बात की। परिवार के साथ बैठकर के उसे सुना और अब उसे दिनभर गुनगुनाएंगे भी। हम देश की कर्मठता की जितनी चर्चा करते हैं, उतनी ही हमें ऊर्जा मिलती है। इसी ऊर्जा प्रवाह के साथ चलते-चलते आज हम 'मन की बात' के 98वें एपिसोड के मुकाम तक पहुँच गए हैं। आज से कुछ दिन बाद ही होली का त्यौहार है। आप सभी को होली की शुभकामनाएँ। हमें, हमारे त्यौहार वोकल फॉर लोकल (**Vocal for Local**) के संकल्प के साथ ही मनाने हैं। अपने अनुभव भी मेरे साथ **share** करना न भूलियेगा। तब तक के लिये मुझे विदा दीजिये। अगली बार हम फिर नये विषयों के साथ मिलेंगे। बहुत-बहुत धन्यवाद। नमस्कार।

\*\*\*\*\*

**DS/SH/VK**

(रिलीज़ आईडी: 1902476) आगंतुक पटल : 682

इस विज्ञप्ति को इन भाषाओं में पढ़ें: English



प्रधानमंत्री कार्यालय



## मन की बात की 99वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (26.03.2023)

प्रविष्टि तिथि: 26 MAR 2023 11:37AM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में आप सभी का एक बार फिर बहुत-बहुत स्वागत है। आज इस चर्चा को शुरू करते हुए मन-मस्तिष्क में कितने ही भाव उमड़ रहे हैं। हमारा और आपका 'मन की बात' का ये साथ, अपने निन्यानवें (99वें) पायदान पर आ पहुँचा है। आम तौर पर हम सुनते हैं कि निन्यानवें (99वें) का फेर बहुत कठिन होता है। क्रिकेट में तो 'Nervous Nineties' को बहुत मुश्किल पड़ाव माना जाता है। लेकिन, जहाँ भारत के जन-जन के 'मन की बात' हो, वहाँ की प्रेरणा ही कुछ और होती है। मुझे इस बात की भी खुशी है कि 'मन की बात' के सौवें (100वें) episode को लेकर देश के लोगों में बहुत उत्साह है। मुझे बहुत सारे सन्देश मिल रहे हैं, फोन आ रहे हैं। आज जब हम आज़ादी का अमृतकाल मना रहे हैं, नए संकल्पों के साथ आगे बढ़ रहे हैं, तो सौवें (100वें) 'मन की बात' को लेकर, आपके सुझावों, और विचारों को जानने के लिए मैं भी बहुत उत्सुक हूँ। मुझे, आपके ऐसे सुझावों का बेसब्री से इंतज़ार है। वैसे तो इंतज़ार हमेशा होता है लेकिन इस बार ज़रा इंतज़ार ज्यादा है। आपके ये सुझाव और विचार ही 30 अप्रैल को होने वाले सौवें (100वें) 'मन की बात' को और यादगार बनाएंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में हमने ऐसे हजारों लोगों की चर्चा की है, जो दूसरों की सेवा के लिए अपना जीवन समर्पित कर देते हैं। कई लोग ऐसे होते हैं जो बेटियों की शिक्षा के लिए अपनी पूरी पेंशन लगा देते हैं, कोई अपने पूरे जीवन की कमाई पर्यावरण और जीव-सेवा के लिए समर्पित कर देता है। हमारे देश में परमार्थ को इतना ऊपर रखा गया है कि दूसरों के सुख के लिए, लोग, अपना सर्वस्व दान देने में भी संकोच नहीं करते। इसलिए तो हमें बचपन से शिवि और दधीचि जैसे देह-दानियों की गाथाएँ सुनाई जाती हैं।

साथियो, आधुनिक Medical Science के इस दौर में Organ Donation, किसी को जीवन देने का एक बहुत बड़ा माध्यम बन चुका है। कहते हैं, जब एक व्यक्ति मृत्यु के बाद अपना शरीर दान करता है तो उससे 8 से 9 लोगों को एक नया जीवन मिलने की संभावना बनती है। संतोष की बात है कि आज देश में Organ Donation के प्रति जागरूकता भी बढ़ रही है। साल 2013 में, हमारे देश में, Organ Donation के 5 हजार से भी कम cases थे, लेकिन 2022 में, ये संख्या बढ़कर, 15 हजार से ज्यादा हो गई है। Organ Donation करने वाले व्यक्तियों ने, उनके परिवार ने, वाकई, बहुत पुण्य का काम किया है।

साथियो, मेरा बहुत समय से मन था कि मैं ऐसा पुण्य कार्य करने वाले लोगों के 'मन की बात' जानूँ और इसे देशवासियों के साथ भी share करूँ। इसलिए आज 'मन की बात' में हमारे साथ एक प्यारी सी बिटिया, एक सुंदर गुडिया के पिता और उनकी माता जी हमारे साथ जुड़ने जा रहे हैं। पिता जी का नाम है सुखबीर सिंह संधू जी और माता जी का नाम है सुप्रीत कौर जी, ये परिवार पंजाब के अमृतसर में रहते हैं। बहुत मन्तों के बाद उन्हें, एक बहुत सुंदर गुडिया, बिटिया हुई थी। घर के लोगों ने बहुत प्यार से उसका नाम रखा था – अबाबत कौर। अबाबत का अर्थ, दूसरे की सेवा से जुड़ा है, दूसरों का कष्ट दूर करने से जुड़ा है। अबाबत जब सिर्फ़ उनतालीस (39) दिन की थी, तभी वो यह दुनिया छोड़कर चली गई। लेकिन सुखबीर सिंह संधू जी और उनकी पत्नी सुप्रीत कौर जी ने, उनके परिवार ने, बहुत ही प्रेरणादायी फैसला लिया। ये फैसला था - उनतालीस (39) दिन की उम्र वाली बेटि के अंगदान का, Organ Donation का। हमारे साथ इस समय phone line पर सुखबीर सिंह और उनकी श्रीमती जी मौजूद हैं। आइये, उनसे बात करते हैं।

प्रधानमंत्री जी - सुखबीर जी नमस्ते।

सुखबीर जी – नमस्ते माननीय प्रधानमंत्री जी। सत श्री अकाल

प्रधान मंत्री जी – सत श्री अकाल जी, सत श्री अकाल जी, सुखबीर जी मैं आज 'मन की बात' के सम्बन्ध में सोच रहा था तो मुझे लगा कि अबाबत की बात इतनी प्रेरक है वो आप ही के मुँह से सुनूं क्योंकि घर में बेटी का जन्म जब होता है तो अनेक सपने अनेक खुशियाँ लेकर आता है, लेकिन बेटी इतनी जल्दी चली जाए वो कष्ट कितना भयंकर होगा उसका भी मैं अंदाज़ लगा सकता हूँ। **जिस प्रकार से आपने फैसला लिया, तो मैं सारी बात जानना चाहता हूँ जी।**

सुखबीर जी – सर भगवान ने बहुत अच्छा बच्चा दिया था हमें, बहुत प्यारी गुडिया हमारे घर में आई थी। उसके पैदा होते ही हमें पता चला कि उसके दिमाग में एक ऐसा नाड़ियों का गुच्छा बना हुआ है जिसकी वजह से उसके दिल का आकार बड़ा हो रहा है। तो हम हैरान हो गए कि बच्चे की सेहत इतनी अच्छी है, इतना खुबसूरत बच्चा है और इतनी बड़ी समस्या लेकर पैदा हुआ है तो पहले 24 दिन तक तो बहुत ठीक रहा बच्चा बिल्कुल **normal** रहा। अचानक उसका दिल एकदम काम करना बंद हो गया, तो हम जल्दी से उसको हॉस्पिटल लेके गए, वहाँ, डॉक्टरों ने उसको **revive** तो कर दिया लेकिन समझने में टाईम लगा कि इसको क्या दिक्कत आई इतनी बड़ी दिक्कत की छोटा सा बच्चा और अचानक दिल का दौरा पड़ गया तो हम उसको इलाज के लिए **PGI** चंडीगढ़ ले गए। वहाँ बड़ी बहादुरी से उस बच्चे ने इलाज के लिए संघर्ष किया। लेकिन बीमारी ऐसी थी कि उसका इलाज इतनी छोटी उम्र में संभव नहीं था। डॉक्टरों ने बहुत कोशिश की कि उसको **revive** करवाया जाए अगर छः महीने के आस-पास बच्चा चला जाए तो उसका **operation** करने की सोची जा सकती थी। लेकिन भगवान को कुछ और मंजूर था, उन्होंने, केवल **39 days** की जब हुई तब डॉक्टर ने कहा कि इसको दोबारा दिल का दौरा पड़ा है अब उम्मीद बहुत कम रह गई है। तो हम दोनों मियाँ-बीवी रोते हुए इस निर्णय पे पहुँचे कि हमने देखा था उसको बहादुरी से जूझते हुए बार बार ऐसे लग रहा था जैसे अब चला जाएगी लेकिन फिर **revive** कर रही थी तो हमें लगा कि इस बच्चे का यहाँ आने का कोई मकसद है तो उन्होंने जब बिल्कुल ही जवाब दे दिया तो हम दोनों ने **decide** किया कि क्यों न हम इस बच्चे के **organ donate** कर दें। शायद किसी और की जिंदगी में उजाला आ जाए, फिर हमने **PGI** के जो **administrative block** है उनमें संपर्क किया और उन्होंने हमें **guide** किया कि इतने छोटे बच्चे की केवल **kidney** ही ली जा सकती है। परमात्मा ने हिम्मत दी गुरु नानक साहब का फलसफा है इसी सोच से हमने **decision** ले लिया।

प्रधान मंत्री जी– गुरुओं ने जो शिक्षा दी है जी उसे आपने जीकर के दिखाया है जी। सुप्रीत जी है क्या ? उनसे बात हो सकती है ?

सुखबीर जी– जी सर।

सुप्रीत जी– हेल्लो।

प्रधान मंत्री जी– सुप्रीत जी मैं आपको प्रणाम करता हूँ

सुप्रीत जी– नमस्कार सर नमस्कार, सर ये हमारे लिए बड़ी गर्व की बात है कि आप हमसे बात कर रहे हैं।

प्रधान मंत्री जी– आपने इतना बड़ा काम किया है और मैं मानता हूँ देश ये सारी बातें जब सुनेगा तो बहुत लोग किसी की जिंदगी बचाने के लिए आगे आयेंगे। अबाबत का ये योगदान है, ये बहुत बड़ा है जी।

सुप्रीत जी– सर ये भी गुरु नानक बादशाह जी शायद बकशीश थी कि उन्होंने हिम्मत दी ऐसा **decision** लेने में।

प्रधान मंत्री जी– गुरुओं की कृपा के बिना तो कुछ हो ही नहीं सकता जी।

सुप्रीत जी– बिल्कुल सर, बिल्कुल।

प्रधान मंत्री जी– सुखबीर जी जब आप अस्पताल में होंगे और ये हिला देने वाला समाचार जब डॉक्टर ने आपको दिया, उसके बाद भी आपने स्वस्थ मन से आपने और आपकी श्रीमती जी ने इतना बड़ा निर्णय किया, गुरुओं की सीख तो है ही है कि आपके मन में इतना बड़ा उदार विचार और सचमुच में अबाबत का जो अर्थ सामान्य भाषा में कहें तो मददगार होता है। ये काम कर दिया ये उस पल को मैं सुनना चाहता हूँ।

सुखबीर जी– सर **actually** हमारे एक **family friend** हैं प्रिया जी उन्होंने अपने **organ donate** किये थे उनसे भी हमें प्रेरणा मिली तो उस समय तो हमें लगा कि शरीर जो है पञ्च तत्वों में विलीन हो जाएगा। जब कोई बिछड़ जाता है चला जाता है तो उसके शरीर को जला दिया जाता है या दबा दिया जाता है, लेकिन, अगर उसके **organ** किसी के काम आ जाएँ, तो ये

भले का ही काम है, और उस समय हमें, और गर्व महसूस हुआ, जब **doctors** ने, ये बताया हमें, कि आपकी बेटी, **India** की **youngest donar** बनी है जिसके **organ successfully transplant** हुए, तो हमारा सर गर्व से ऊँचा हो गया, कि जो नाम हम अपने **parents** का, इस उम्र तक नहीं कर पाए, एक छोटा सा बच्चा आ के इतने दिनों में हमारा नाम ऊँचा कर गया और इससे और बड़ी बात है कि आज आपसे बात हो रही है इस विषय पे। हम **proud feel** कर रहे हैं।

प्रधान मंत्री जी - सुखबीर जी, आज आपकी बेटी का सिर्फ एक अंग जीवित है, ऐसा नहीं है। आपकी बेटी मानवता की अमर-गाथा की अमर यात्री बन गई है। अपने शरीर के अंश के जरिए वो आज भी उपस्थित है। इस नेक कार्य के लिए, मैं, आपकी, आपकी श्रीमती जी की, आपके परिवार की, सराहना करता हूँ।

सुखबीर जी- Thank You sir.

साथियो, **organ donation** के लिए सबसे बड़ा जज्बा यही होता है कि जाते-जाते भी किसी का भला हो जाए, किसी का जीवन बच जाए। जो लोग, **organ donation** का इंतजार करते हैं, वो जानते हैं, कि, इंतजार का एक-एक पल गुजरना, कितना मुश्किल होता है। और ऐसे में जब कोई अंगदान या देहदान करने वाला मिल जाता है, तो उसमें, ईश्वर का स्वरूप ही नजर आता है। झारखंड की रहने वाली स्नेहलता चौधरी जी भी ऐसी ही थी जिन्होंने ईश्वर बनकर दूसरों को जिंदगी दी। 63 वर्ष की स्नेहलता चौधरी जी, अपना **heart, kidney** और **liver**, दान करके गईं। आज 'मन की बात' में, उनके बेटे भाई अभिजीत चौधरी जी हमारे साथ हैं। आइये उनसे सुनते हैं।

प्रधानमंत्री जी- अभिजीत जी नमस्कार।

अभिजीत जी- प्रणाम सर।

प्रधानमंत्री जी- अभिजीत जी आप एक ऐसी माँ के बेटे हैं जिसने आपको जन्म देकर एक प्रकार से जीवन तो दिया ही, लेकिन और जो अपनी मृत्यु के बाद भी आपकी माता जी कई लोगों को जीवन देकर गईं। एक पुत्र के नाते अभिजीत आप जरूर गर्व अनुभव करते होंगे

अभिजीत जी – हाँ जी सर।

प्रधानमंत्री जी- आप, अपनी माता जी के बारे में जरा बताइये, किन परिस्थितियों में **organ donation** का फैसला लिया गया ?

अभिजीत जी- मेरी माता जी सराइकेला बोलकर एक छोटा सा गाँव है झारखंड में, वहां पर मेरे मम्मी पापा दोनों रहते हैं। ये पिछले पच्चीस साल से लगातार **morning walk** करते थे और अपने **habit** के अनुसार सुबह 4 बजे अपने **morning walk** के लिए निकली थी। उस समय एक **motorcycle** वाले ने इनको पीछे से धक्का मारा और वो उसी समय गिर गई जिससे उनको सर पे बहुत ज्यादा चोट लगा। तुरंत हम लोग उनको सदर अस्पताल सराइकेला ले गए जहाँ डॉक्टर साहब ने उनकी मरहम पट्टी की पर खून बहुत निकल रहा था। और उनको कोई **sense** नहीं था। तुरंत हम लोग उनको **Tata main hospital** लेकर चले गए। वहां उनकी सर्जरी हुई, 48 घंटे के **observation** के बाद डॉक्टर साहब ने बोला कि वहां से **chances** बहुत कम हैं। फिर हमने उनको **Airlift** कर के **AIIMS Delhi** लेकर आये हम लोग। यहाँ पर उनकी **treatment** हुई तक्ररीबन 7-8 दिन। उसके बाद **position** ठीक था एकदम उनका **blood pressure** काफी गिर गया उसके बाद पता चला उनकी **brain death** हो गई है। तब फिर डॉक्टर साहब हमें प्रोटोकॉल के साथ **brief** कर रहे थे **organ donation** के बारे में। हम अपने पिताजी, को शायद ये नहीं बता पाते कि, **organ donation type** का भी कोई चीज़ होता है, क्योंकि हमें लगा, वो उस बात को **absorb** नहीं कर पायेंगे, तो, उनके दिमाग से हम ये निकालना चाहते थे कि ऐसा कुछ चल रहा है। जैसे ही हमने उनको बोला की **organ donation** की बातें चल रही हैं। तब उन्होंने ये बोला की नहीं- नहीं ये मम्मी का बहुत मन था और हमें ये करना है। हम काफी निराश थे उस समय तक जब तक हमें ये पता चला था कि मम्मी नहीं बच सकेंगे, पर जैसे ही ये **organ donation** वाला **discussion** चालू हुआ वो निराशा एक बहुत ही **positive side** चला गया और हम काफी अच्छे एक बहुत ही **positive environment** में आ गए। उसको करते-करते फिर हम लोग रात में 8 बजे **counseling** हुई। दूसरे दिन हम लोगों ने **organ donation** किया। इसमें मम्मी का एक सोच बहुत बड़ा था कि पहले वो



काफी नेत्रदान और इन चीजों में **social activities** में ये बहुत **active** थी। शायद यही सोच को लेकर के ये इतना बड़ा चीज़ हम लोग कर पाए, और मेरे पिताजी का जो **decision making** था इस चीज़ के बारे में, इस कारण से ये चीज़ हो पाया।

प्रधानमंत्री जी- कितने लोगों को काम आया अंग ?

अभिजीत जी- इनका **heart**, दो **kidney**, **liver** और दोनों आँख ये **donation** हुआ था तो चार लोगों की जान और दो जनों को आँख मिला है।

प्रधानमंत्री जी- अभिजीत जी, आपके पिता जी और माताजी दोनों नमन के अधिकारी हैं। मैं उनको प्रणाम करता हूँ और आपके पिताजी ने इतने बड़े निर्णय में, आप परिवार जनों का नेतृत्व किया, ये वाकई बहुत ही प्रेरक है और मैं मानता हूँ कि माँ तो माँ ही होती है। माँ एक अपने आप में प्रेरणा भी होती है। लेकिन माँ जो परम्पराएँ छोड़ कर के जाती हैं, वो पीढ़ी-दर-पीढ़ी, एक बहुत बड़ी ताकत बन जाती हैं। अंगदान के लिए आपकी माता जी की प्रेरणा आज पूरे देश तक पहुँच रही है। मैं आपके इस पवित्र कार्य और महान कार्य के लिए आपके पूरे परिवार को बहुत-बहुत बधाई देता हूँ। अभिजीत जी धन्यवाद जी, और आपके पिताजी को हमारा प्रणाम जरूर कह देना।

अभिजीत जी- जरूर-जरूर, **thank you**.

साथियो, 39 दिन की अबाबत कौर हो या 63 वर्ष की स्नेहलता चौधरी, इनके जैसे दानवीर, हमें, जीवन का महत्व समझाकर जाते हैं। हमारे देश में, आज, बड़ी संख्या में ऐसे जरूरतमंद हैं, जो स्वस्थ जीवन की आशा में किसी **organ donate** करने वाले का इंतज़ार कर रहे हैं। मुझे संतोष है कि अंगदान को आसान बनाने और प्रोत्साहित करने के लिए पूरे देश में एक जैसी **policy** पर भी काम हो रहा है। इस दिशा में राज्यों के **domicile** की शर्त को हटाने का निर्णय भी लिया गया है, यानी, अब देश के किसी भी राज्य में जाकर मरीज **organ** प्राप्त करने के लिए **register** करवा पाएगा। सरकार ने **organ donation** के लिए 65 वर्ष से कम आयु की आयु-सीमा को भी खत्म करने का फैसला लिया है। इन प्रयासों के बीच, मेरा देशवासियों से आग्रह है, कि **organ donor**, ज्यादा से ज्यादा संख्या में आगे आएँ। आपका एक फैसला, कई लोगों की जिंदगी बचा सकता है, जिंदगी बना सकता है।

मेरे प्यारे देशवासियो, ये नवरात्र का समय है, शक्ति की उपासना का समय है। आज, भारत का जो सामर्थ्य नए सिरे से निखरकर सामने आ रहा है, उसमें बहुत बड़ी भूमिका हमारी नारी शक्ति की है। हाल-फिलहाल ऐसे कितने ही उदाहरण हमारे सामने आये हैं। आपने सोशल मीडिया पर, एशिया की पहली महिला लोको पायलट सुरेखा यादव जी को जरूर देखा होगा। सुरेखा जी, एक और कीर्तिमान बनाते हुये वंदे भारत एक्सप्रेस की भी पहली महिला लोको पायलट बन गई हैं। इसी महीने, **producer** गुनीत मोंगा और **Director** कार्तिकी गोंज़ाल्विस उनकी **Documentary 'Elephant Whisperers'** ने **Oscar** जीतकर देश का नाम रौशन किया है। देश के लिए एक और उपलब्धि **Bhabha Atomic Research Centre** की **Scientist**, बहन ज्योतिर्मयी मोहंती जी ने भी हासिल की है। ज्योतिर्मयी जी को **Chemistry** और **Chemical Engineering** की **field** में **IUPAC** का विशेष **award** मिला है। इस वर्ष की शुरुआत में ही भारत की **Under-19** महिला क्रिकेट टीम ने **T-20 World cup** जीतकर नया इतिहास रचा। अगर आप राजनीति की ओर देखेंगे, तो एक नई शुरुआत नागालैंड में हुई है। नागालैंड में 75 वर्षों में पहली बार दो महिला विधायक जीतकर विधानसभा पहुंची है। इनमें से एक को नागालैंड सरकार में मंत्री भी बनाया गया है, यानि, राज्य के लोगों को पहली बार एक महिला मंत्री भी मिली हैं।

साथियो, कुछ दिनों पहले मेरी मुलाकात, उन जांबाज बेटियों से भी हुई, जो, तुर्किए में विनाशकारी भूकंप के बाद वहां के लोगों की मदद के लिए गयी थीं। ये सभी **NDRF** के दस्ते में शामिल थी। उनके साहस और कुशलता की पूरी दुनिया में तारीफ़ हो रही है। भारत ने **UN Mission** के तहत शांतिसेना में **Women-only Platoon** की भी तैनाती की है।

आज, देश की बेटियाँ, हमारी तीनों सेनाओं में, अपने शौर्य का झंडा बुलंद कर रही हैं। **Group Captain** शालिजा धामी **Combat Unit** में **Command Appointment** पाने वाली पहली महिला वायुसेना अधिकारी बनी हैं। उनके पास करीब 3 हजार घंटे का **flying experience** है। इसी तरह, भारतीय सेना की जांबाज **captain** शिवा चौहान सियाचिन में तैनात होने वाली पहली महिला अधिकारी बनी हैं। सियाचिन में जहाँ पारा माइनस सिक्सटी (-60) डिग्री तक चला जाता है, वहाँ शिवा तीन महीनों के लिए तैनात रहेंगी।

साथियो, यह **list** इतनी लम्बी है कि यहाँ सबकी चर्चा करना भी मुश्किल है। ऐसी सभी महिलाएं, हमारी बेटियां, आज, भारत और भारत के सपनों को ऊर्जा दे रही हैं। नारीशक्ति की ये ऊर्जा ही विकसित भारत की प्राणवायु है।

मेरे प्यारे देशवासियो, इन दिनों पूरे विश्व में स्वच्छ ऊर्जा, **renewable energy** की खूब बात हो रही है। मैं, जब विश्व के लोगों से मिलता हूँ, तो वो इस क्षेत्र में भारत की अभूतपूर्व सफलता की जरूर चर्चा करते हैं। खासकर, भारत, **Solar energy** के क्षेत्र में जिस तेजी से आगे बढ़ रहा है, वो अपने आप में एक बड़ी उपलब्धि है। भारत के लोग तो सदियों से सूर्य से विशेष रूप से नाता रखते हैं। हमारे यहाँ सूर्य की शक्ति को लेकर जो वैज्ञानिक समझ रही है, सूर्य की उपासना की जो परंपराएँ रही हैं, वो अन्य जगहों पर, कम ही देखने को मिलते हैं। मुझे खुशी है कि आज हर देशवासी सौर ऊर्जा का महत्व भी समझ रहा है, और **clean energy** में अपना योगदान भी देना चाहता है। 'सबका प्रयास' की यही **spirit** आज भारत के **Solar Mission** को आगे बढ़ा रही है। महाराष्ट्र के पुणे में, ऐसे ही एक बेहतरीन प्रयास ने, मेरा ध्यान अपनी ओर खींचा है। यहाँ **MSR-Olive Housing Society** के लोगों ने तय किया कि वे **society** में पीने के पानी, लिफ्ट और लाईट जैसे सामूहिक उपयोग की चीजें, अब, **solar energy** से ही चलाएंगे। इसके बाद इस **society** में सबने मिलकर **Solar Panel** लगवाए। आज इन **Solar Panels** से हर साल करीब 90 हजार किलोवाट Hour बिजली पैदा हो रही है। इससे हर महीने लगभग 40,000 रुपये की बचत हो रही है। इस बचत का लाभ **Society** के सभी लोगों को हो रहा है।

साथियो, पुणे की तरह ही दमन-दीव में जो दीव है, जो एक अलग जिला है, वहाँ के लोगों ने भी, एक अद्भुत काम करके दिखाया है। आप जानते ही होंगे कि दीव, सोमनाथ के पास है। दीव भारत का पहला ऐसा जिला बना है, जो, दिन के समय सभी जरूरतों के लिए शत-प्रतिशत **Clean Energy** का इस्तेमाल कर रहा है। दीव की इस सफलता का मंत्र भी सबका प्रयास ही है। कभी यहाँ बिजली उत्पादन के लिए संसाधनों की चुनौती थी। लोगों ने इस चुनौती के समाधान के लिए **Solar Energy** को चुना। यहाँ बंजर जमीन और कई **Buildings** पर **Solar Panels** लगाए गए। इन **Panels** से, दीव में, दिन के समय, जितनी बिजली की जरूरत होती है, उससे ज्यादा बिजली पैदा हो रही है। इस **Solar Project** से, बिजली खरीद पर खर्च होने वाले करीब, 52 करोड़ रुपये भी बचे हैं। इससे पर्यावरण की भी बड़ी रक्षा हुई है।

साथियो, पुणे और दीव उन्होंने जो कर दिखाया है, ऐसे प्रयास देशभर में कई और जगहों पर भी हो रहे हैं। इनसे पता चलता है कि पर्यावरण और प्रकृति को लेकर हम भारतीय कितने संवेदनशील हैं, और हमारा देश, किस तरह भविष्य की पीढ़ी के लिए बहुत जागृत है। मैं इस तरह के सभी प्रयासों की हृदय से सराहना करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, हमारे देश में समय के साथ, स्थिति-परिस्थितियों के अनुसार, अनेक परम्पराएँ विकसित होती हैं। यही परम्पराएँ, हमारी संस्कृति का सामर्थ्य बढ़ाती हैं और उसे नित्य नूतन प्राणशक्ति भी देती हैं। कुछ महीने पहले ऐसी ही एक परंपरा शुरू हुई काशी में। काशी-तमिल संगमम के दौरान, काशी और तमिल क्षेत्र के बीच सदियों से चले आ रहे ऐतिहासिक और सांस्कृतिक संबंधों को **Celebrate** किया गया। 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना हमारे देश को मजबूती देती है। हम जब एक-दूसरे के बारे में जानते हैं, सीखते हैं, तो, एकता की ये भावना और प्रगाढ़ होती है। **Unity** की इसी **Spirit** के साथ अगले महीने गुजरात के विभिन्न हिस्सों में 'सौराष्ट्र-तमिल संगमम' होने जा रहा है। 'सौराष्ट्र-तमिल संगमम' 17 से 30 अप्रैल तक चलेगा। 'मन की बात' के कुछ श्रोता जरूर सोच रहे होंगे, कि, गुजरात के सौराष्ट्र का तमिलनाडु से क्या संबंध है ? दरअसल, सदियों पहले सौराष्ट्र के अनेकों लोग तमिलनाडु के अलग-अलग हिस्सों में बस गए थे। ये लोग आज भी 'सौराष्ट्री तमिल' के नाम से जाने जाते हैं। उनके खान-पान, रहन-सहन, सामाजिक संस्कारों में आज भी कुछ-कुछ सौराष्ट्र की झलक मिल जाती है। मुझे इस आयोजन को लेकर तमिलनाडु से बहुत से लोगों ने सराहना भरे पत्र लिखे हैं। मदुरै में रहने वाले जयचंद्रन जी ने एक बड़ी ही भावुक बात लिखी है। उन्होंने कहा है कि – "हजार साल के बाद, पहली बार किसी ने सौराष्ट्र-तमिल के इन रिश्तों के बारे में सोचा है, सौराष्ट्र से तमिलनाडु आकर के बसे हुए लोगों को पूछा है।" जयचंद्रन जी की बातें, हजारों तमिल भाई-बहनों की अभिव्यक्ति हैं।

साथियो, 'मन की बात' के श्रोताओं को, मैं, असम से जुड़ी हुई एक खबर के बारे में बताना चाहता हूँ। ये भी 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' की भावना को मजबूत करती है। आप सभी जानते हैं कि हम वीर लासित बोरफुकन जी की 400वीं जयंती मना रहे हैं। वीर लासित बोरफुकन ने अत्याचारी मुगल सल्तनत के हाथों से, गुवाहाटी को आज़ाद करवाया था। आज देश, इस महान योद्धा के अदम्य साहस से परिचित हो रहा है। कुछ दिन पहले लासित बोरफुकन के जीवन पर आधारित निबंध लेखन का एक अभियान चलाया गया था। आपको यह जानकर आश्चर्य होगा कि इसके लिए करीब 45 लाख लोगों ने निबंध भेजे। आपको, ये जानकर भी खुशी होगी कि अब यह एक **Guinness Record** बन चुका है। और सबसे बड़ी बात है और जो ज्यादा

प्रसन्नता की बात ये है, कि, वीर लासित बोरफुकन पर ये जो निबंध लिखे गए है उसमें करीब-करीब 23 अलग-अलग भाषाओं में लिखा गया है और लोगों ने भेजा है। इनमें, असमिया भाषा के अलावा, हिंदी, अंग्रेजी, बांग्ला, बोडो, नेपाली, संस्कृत, संथाली जैसी भाषाओं में लोगों ने निबंध भेजे हैं। मैं इस प्रयास का हिस्सा बने सभी लोगों की हृदय से प्रशंसा करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, जब कश्मीर या श्रीनगर की बात होती है, तो सबसे पहले, हमारे सामने, उसकी वादियाँ और डल झील की तस्वीर आती है। हम में से हर कोई डल झील के नज़ारों का लुत्फ़ उठाना चाहता है, लेकिन, डल झील में एक और बात खास है। डल झील, अपने स्वादिष्ट Lotus Stems - कमल के तनों या कमल ककड़ी, के लिये भी जानी जाती है। कमल के तनों को देश में अलग-अलग जगह, अलग-अलग नाम से, जानते हैं। कश्मीर में इन्हें नादरु कहते हैं। कश्मीर के नादरु की demand लगातार बढ़ रही है। इस demand को देखते हुए डल झील में नादरु की खेती करने वाले किसानों ने एक FPO बनाया है। इस FPO में करीब 250 किसान शामिल हुए हैं। आज ये किसान अपने नादरु को विदेशों तक भेजने लगे हैं। अभी कुछ समय पहले ही इन किसानों ने दो खेप UAE भेजी हैं। ये सफलता कश्मीर का नाम तो कर ही रही है, साथ ही इससे, सैकड़ों किसानों की, आमदनी भी बढ़ी है।

साथियों, कश्मीर के लोगों का कृषि से ही जुड़ा हुआ ऐसा ही एक और प्रयास इन दिनों अपनी कामयाबी की खुशबू फैला रहा है। आप सोच रहे होंगे कि मैं कामयाबी की खुशबू क्यों बोल रहा हूँ - बात है ही खुशबू की, सुगंध की ही तो बात है! दरअसल, जम्मू-कश्मीर के डोडा जिले में एक कस्बा है 'भदरवाह' ! यहाँ के किसान, दशकों से मक्के की पारंपरिक खेती करते आ रहे थे, लेकिन, कुछ किसानों ने, कुछ अलग, करने की सोची। उन्होंने, floriculture, यानी फूलों की खेती का रुख किया। आज, यहाँ के करीब 25 सौ किसान (ढाई हजार किसान) लैवेंडर (lavender) की खेती कर रहे हैं। इन्हें केंद्र सरकार के aroma mission से मदद भी मिली है। इस नई खेती ने किसानों की आमदनी में बड़ा इजाफ़ा किया है, और आज, लैवेंडर के साथ-साथ, इनकी सफलता की खुशबू भी, दूर-दूर तक फैल रही है।

साथियों, जब कश्मीर की बात हो, कमल की बात हो, फूल की बात हो, सुगंध की बात हो, तो, कमल के फूल पर विराजमान रहने वाली माँ शारदा का स्मरण आना बहुत स्वाभाविक है। कुछ दिन पूर्व ही कुपवाड़ा में माँ शारदा के भव्य मंदिर का लोकार्पण हुआ है। ये मंदिर उसी मार्ग पर बना है, जहाँ से कभी शारदा पीठ के दर्शनों के लिये जाया करते थे। स्थानीय लोगों ने इस मंदिर के निर्माण में बहुत मदद की है। मैं, जम्मू-कश्मीर के लोगों को इस शुभ कार्य के लिये बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, इस बार 'मन की बात' में बस इतना ही। अगली बार, आपसे, 'मन की बात' के सौवें (100वें) एपिसोड में मुलाकात होगी। आप सभी, अपने सुझाव जरूर भेजिए। मार्च के इस महीने में, हम, होली से लेकर नवरात्रि तक, कई पर्व और त्योहारों में व्यस्त रहे हैं। रमजान का पवित्र महीना भी शुरू हो चुका है। अगले कुछ दिनों में श्री राम नवमी का महापर्व भी आने वाला है। इसके बाद महावीर जयंती, Good Friday और Easter भी आएंगे। अप्रैल के महीने में हम, भारत की दो महान विभूतियों की जयंती भी मनाते हैं। ये दो महापुरुष हैं – महात्मा ज्योतिबा फुले, और बाबा साहब आंबेडकर। इन दोनों ही महापुरुषों ने समाज में भेदभाव मिटाने के लिये अभूतपूर्व योगदान दिया। आज, आजादी के अमृतकाल में, हमें, ऐसी महान विभूतियों से सीखने और निरंतर प्रेरणा लेने की जरूरत है। हमें, अपने कर्तव्यों को, सबसे आगे रखना है। साथियों, इस समय कुछ जगहों पर कोरोना भी बढ़ रहा है। इसलिये आप सभी को एहतियात बरतनी है, स्वच्छता का भी ध्यान रखना है। अगले महीने, 'मन की बात' के सौवें (100वें) एपिसोड में, हम लोग, फिर मिलेंगे, तब तक के लिए मुझे विदा दीजिए। धन्यवाद। नमस्कार।

\*\*\*\*\*

**DS/TS/VK**

(रिलीज़ आईडी: 1910857) आगंतुक पटल : 679

प्रधानमंत्री कार्यालय



## मन की बात की 101वीं कड़ी में प्रधानमंत्री के सम्बोधन का मूल पाठ (28.05.2023)

Posted On: 28 MAY 2023 11:33AM by PIB Delhi

मेरे प्यारे देशवासियो, नमस्कार। 'मन की बात' में एक बार फिर, आप सभी का बहुत-बहुत स्वागत है। इस बार 'मन की बात' का ये एपिसोड 2<sup>nd</sup> century का प्रारंभ है। पिछले महीने हम सभी ने इसकी special century को Celebrate किया है। आपकी भागीदारी ही इस कार्यक्रम की सबसे बड़ी ताकत है। 100वें एपिसोड के Broadcast के समय, एक प्रकार से पूरा देश एक सूत्र में बंध गया था। हमारे सफाईकर्मी भाई-बहन हों या फिर अलग-अलग sectors के दिग्गज, 'मन की बात' ने सबको एक साथ लाने का काम किया है। आप सभी ने जो आत्मीयता और स्नेह 'मन की बात' के लिए दिखाया है, वो अभूतपूर्व है, भावुक कर देने वाला है। जब 'मन की बात' का प्रसारण हुआ, तो उस समय दुनिया के अलग-अलग देशों में, अलग-अलग Time zone में, कहीं शाम हो रही थी तो कहीं देर रात थी, इसके बावजूद, बड़ी संख्या में लोगों ने 100वें एपिसोड को सुनने के लिए समय निकाला। मैंने हजारों मील दूर New Zealand का वो विडियो भी देखा, जिसमें 100 वर्ष की एक माताजी अपना आशीर्वाद दे रही हैं। 'मन की बात' को लेकर देश-विदेश के लोगों ने अपने विचार रखे हैं। बहुत सारे लोगों ने Constructive Analysis भी किया है। लोगों ने इस बात को appreciate किया है कि 'मन की बात' में देश और देशवासियों की उपलब्धियों की ही चर्चा होती है। मैं एक बार फिर आप सभी को इस आशीर्वाद के लिए पूरे आदर के साथ धन्यवाद देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, बीते दिनों हमने 'मन की बात' में काशी- तमिल संगमम की बात की, सौराष्ट्र-तमिल संगमम की बात की। कुछ समय पहले ही वाराणसी में, काशी-तेलुगू संगमम भी हुआ। एक भारत, श्रेष्ठ भारत की भावना को ताकत देने वाला ऐसे ही एक और अनूठा प्रयास देश में हुआ है। ये प्रयास है, युवा संगम का। मैंने सोचा, इस बारे में विस्तार से क्यों न उन्हीं लोगों से पूछा जाए, जो इस अनूठे प्रयास का हिस्सा रहे हैं। इसलिए अभी मेरे साथ फ़ोन पर दो युवा जुड़े हुए हैं - एक हैं अरुणाचल प्रदेश के ग्यामर न्योकुम जी और दूसरी बेटी है बिहार की बिटिया विशाखा सिंह जी। आइए पहले हम ग्यामर न्योकुम से बात करते हैं।

प्रधानमंत्री जी : ग्यामर जी, नमस्ते !

ग्यामर जी : नमस्ते मोदी जी !

प्रधानमंत्री जी : अच्छा ग्यामर जी जरा सबसे पहले तो मैं आपके विषय में जानना चाहता हूँ।

ग्यामर जी – मोदी जी सबसे पहले तो मैं आपका और भारत सरकार का बहुत ही ज्यादा आभार व्यक्त करता हूँ, कि आपने बहुत कीमती Time निकाल के मुझ से बात करने का मुझे मौका दिया मैं National Institute Of Technology, Arunachal Pradesh में First year में Mechanical Engineering में पढ़ रहा हूँ

प्रधानमंत्री जी : और परिवार में क्या करते हैं पिताजी वगैरह।

ग्यामर जी : जी मेरे पिताजी छोटे मोटे business और उसके बाद कुछ farming में सब करते हैं।

प्रधानमंत्री जी : युवा संगम के लिए आपको पता कैसे चला, युवा संगम में गए कहाँ, कैसे गए, क्या हुआ ?



ग्यामर जी : मोदी जी मुझे युवा संगम का हमारे जो **institution** हैं जो **NIT** हैं उन्होंने हमें बताया था कि आप इसमें भाग ले सकते हैं। तो मैंने फिर थोड़ा **internet** में खोज किया फिर मुझे पता चला कि ये बहुत ही अच्छा **Programme** है जिसने मुझे एक भारत श्रेष्ठ भारत का जो **vision** है उसमें भी बहुत ही योगदान दे सकते हैं और मुझे कुछ नया चीज़ जानने का मौका मिलेगा ना, तो तुरंत, मैंने, फिर, उसमें **website** में जाके **enrol** किया। मेरा अनुभव बहुत ही मजेदार रहा, बहुत ही अच्छा था।

प्रधानमंत्री जी : कोई **selection** आप को करना था?

ग्यामर जी : मोदी जी जब **website** खोला था तो अरुणाचल वालों के लिए दो **option** था। पहला था आंध्रप्रदेश जिसमें **IIT तिरुपति** था और दूसरा था **Central University, Rajasthan** तो मैंने राजस्थान में किया था अपना **First preference, Second Preference** मैंने **IIT तिरुपति** किया था। तो मुझे राजस्थान के लिए **select** हुआ था। तो मैं राजस्थान गया था।

प्रधानमंत्री जी : कैसा रहा आपका राजस्थान यात्रा? आप पहली बार राजस्थान गए थे!

ग्यामर जी : हाँ मैं पहली बार अरुणाचल से बाहर गया था मैंने तो जो राजस्थान के किले ये सब तो मैंने बस फिल्म और फ़ोन में ही देखा था न, तो, मैंने, जब, पहली बार गया तो मेरा **experience** बहुत ही वहां के लोग बहुत ही अच्छे थे और जो हमें **treatment** दिया बहुत ही ज्यादा अच्छे थे। क्या हमें नया-नया चीज़ सीखने को मिला मुझे राजस्थान के बड़े झील और उधर के लोग जैसे कि **rain water harvesting** बहुत कुछ नया-नया चीज़ सीखने को मिला, जो मुझे बिल्कुल ही मालूम नहीं था, तो, ये **programme** मुझे बहुत ही अच्छा था, राजस्थान का **visit**।

प्रधानमंत्री जी : देखिये आपको तो सबसे बड़ा फायदा ये हुआ है, कि, अरुणाचल में भी वीरों की भूमि है, राजस्थान भी वीरों की भूमि है और राजस्थान से सेना में भी बहुत बड़ी संख्या में लोग हैं, और अरुणाचल में सीमा पर जो सैनिक हैं उसमें जब भी राजस्थान के लोग मिलेंगे तो आप जरूर उनसे बात करेंगे, कि देखिये, मैं राजस्थान गया था, ऐसा अनुभव था तो, आपकी तो निकटता, एकदम से बढ़ जाएगी। अच्छा आपको वहां कोई समानताएं भी ध्यान में आई होगी आपको लगता होगा हां यार ये अरुणाचल में भी तो ऐसा ही है।

ग्यामर जी : मोदी जी मुझे जो एक समानता मुझे मिली न वो थी कि जो देश प्रेम है ना और जो एक भारत श्रेष्ठ भारत का जो **vision** और जो **feeling** जो मुझे देखा, क्योंकि अरुणाचल में भी लोग अपने आप को बहुत ही गर्व महसूस करते हैं कि वो भारतीय हैं इसलिये और राजस्थान में भी लोग अपनी मातृ भूमि के लिए बहुत जो गर्व महसूस होता है वो चीज़ मुझे बहुत ही ज्यादा नज़र आया और **pecially** जो युवा पीढ़ी है ना क्योंकि मैंने उधर में बहुत सारे युवा के साथ **interact** और बातचीत किया ना तो वो चीज़ जो मुझे बहुत **similarity** नज़र आया, जो वो चाहते हैं कि भारत के लिए जो कुछ करने का और जो अपने देश के लिए प्रेम है ना वो चीज़ मुझे बहुत ही दोनों ही राज्यों में बहुत ही **similarity** नज़र आया।

प्रधानमंत्री जी : तो वहां जो मित्र मिले हैं उनसे परिचय बढ़ाया कि आकर के भूल गए?

ग्यामर जी : नहीं, हमने बढ़ाया परिचय किया।

प्रधानमंत्री जी : हाँ...! तो आप **Social Media** में **active** है ?

ग्यामर जी : जी मोदी जी, मैं **active** हूँ।

प्रधानमंत्री जी : तो आपने **Blog** लिखना चाहिए, अपना ये युवा संगम का अनुभव कैसा रहा, आपने उसमें **enrol** कैसे किया, राजस्थान में अनुभव कैसा रहा ताकि देशभर के युवाओं को पता चले कि एक भारत श्रेष्ठ भारत का माहात्म्य क्या है, ये योजना क्या है ? उसका फायदा युवक कैसे ले सकते हैं, पूरा अपने **experience** का **blog** लिखना चाहिए, तो बहुत लोगों को पढ़ने के लिए काम आयेगा।

ग्यामर जी : जी मैं जरूर करूंगा।

प्रधानमंत्री जी : ग्यामर जी, बहुत अच्छा लगा आपसे बात कर करके, और आप सब युवा देश के लिए, देश के उज्जवल भविष्य के लिए, क्योंकि ये 25 साल अत्यंत महत्वपूर्ण हैं - आपके जीवन के भी और देश के जीवन के भी, तो मेरी बहुत बहुत शुभकामनाएं है धन्यवाद।



ग्यामर जी : धन्यवाद मोदी जी आपको भी।

प्रधानमंत्री जी : नमस्कार, भईया।

साथियो, अरुणाचल के लोग इतनी आत्मीयता से भरे होते हैं, कि उनसे बात करते हुए, मुझे, बहुत आनंद आता है। युवा संगम में ग्यामर जी का अनुभव तो बेहतरीन रहा। आइये, अब बिहार की बेटी विशाखा सिंह जी से बात करते हैं।

प्रधानमंत्री जी : विशाखा जी, नमस्कार।

विशाखा जी : सर्वप्रथम तो भारत के माननीय प्रधानमंत्री जी को मेरा प्रणाम और मेरे साथ सभी Delegates की तरफ से आप को बहुत-बहुत प्रणाम।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा विशाखा जी पहले अपने बारे में बताइए। फिर मुझे युवा संगम के विषय में भी जानना है।

विशाखा जी : मैं बिहार के सासाराम नाम के शहर की निवासी हूँ और मुझे युवा संगम के बारे में मेरे कॉलेज के WhatsApp group के message के through पता चला था सबसे पहले। तो, उसके बाद फिर मैंने पता करा इसके बारे में और detail निकाली कि ये क्या है ? तो मुझे पता चला कि ये प्रधानमंत्री जी की एक scheme 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' के through युवा संगम है। तो उसके बाद मैंने apply करा और जब मैंने apply करा तो मैं excited थी इससे join होने के लिए लेकिन जब वहाँ से घूम के तमिलनाडु जा के वापस आई। वो जो exposure मैंने gain किया उसके बाद मुझे अभी बहुत ज्यादा ऐसा proud feel होता है that I have been the part of this programme, तो मुझे बहुत ही ज्यादा खुशी है उस programme में part लेने की और मैं तहे दिल से आभार व्यक्त करती हूँ आपका कि आपने हमारे जैसे युवाओं के लिए इतना बेहतरीन programme बनाया जिससे हम भारत के विभिन्न भागों के culture को adapt कर सकते हैं।

प्रधानमंत्री जी : विशाखा जी, आप क्या पढ़ती हैं?

विशाखा जी : मैं Computer Science Engineering की Second Year की छात्रा हूँ।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा विशाखा जी, आपने किस राज्य में जाना है, कहाँ जुड़ना है ? वो निर्णय कैसे किया ?

विशाखा जी : जब मैंने ये युवा संगम के बारे में search करना शुरू किया Google पर, तभी मुझे पता चल गया था कि बिहार के delegates को तमिलनाडु के delegates के साथ exchange किया जा रहा है। तमिलनाडु काफी rich cultural state है हमारे country का तो उस time भी जब मैंने ये जाना, ये देखा कि बिहार वालों को तमिलनाडु भेजा जा रहा है तो इसने भी मुझे बहुत ज्यादा मदद किया ये decision लेने में कि मुझे form fill करना चाहिए, वहाँ जाना चाहिए या नहीं और मैं सच में आज बहुत ज्यादा गौरवान्वित महसूस करती हूँ कि मैंने इसमें part लिया और मुझे बहुत खुशी है।

प्रधानमंत्री जी : आपका पहली बार जाना हुआ तमिलनाडु?

विशाखा जी : जी, मैं पहली बार गई थी।

प्रधानमंत्री जी : अच्छा, कोई खास यादगार चीज अगर आप कहना चाहें तो क्या कहेंगे? देश के युवा सुन रहें हैं आपको।

विशाखा जी : जी, पूरा journey ही माने तो मेरे लिए बहुत ही ज्यादा बेहतरीन रहा है। एक-एक पड़ाव पर हमने बहुत ही अच्छी चीजें सीखी हैं। मैंने तमिलनाडु में जाके अच्छे दोस्त बनाए हैं। वहाँ के culture को adapt किया है। वहाँ के लोगों से मिली मैं। लेकिन सबसे ज्यादा अच्छी चीज जो मुझे लगी वहाँ पे वो पहली चीज़ तो ये कि किसी को भी मौका नहीं मिलता है ISRO में जाने का और हम delegates थे तो हमें ये मौका मिला था कि हम ISRO में जाएँ Plus दूसरी बात सबसे अच्छी थी वो जब हम राजभवन में गए और हम तमिलनाडु के राज्यपाल जी से मिले। तो वो दो moment जो था वो मेरे लिए काफी सही था और मुझे ऐसा लगता है कि जिस age में हम हैं as a youth हमें वो मौका नहीं मिल पाता जोकि युवा संगम के through मिला है। तो ये काफी सही और सबसे यादगार moment था मेरे लिए।

प्रधानमंत्री जी : बिहार में तो खाने का तरीका अलग है, तमिलनाडु में खाने का तरीका अलग है।

विशाखा जी : जी।

प्रधानमंत्री जी : तो वो set हो गया था पूरी तरह ?

विशाखा जी : वहाँ जब हम लोग गए थे, तो **South Indian Cuisine** है वहाँ पे तमिलनाडु में। तो जैसे ही हम लोग गए थे तो वहाँ जाते के साथ हमें डोसा, इडली, सांभर, उत्तपम, वड़ा, उपमा ये सब **serve** किया गया था। तो पहले जब हमने **try** करा तो **that was too good!** वहाँ का खाना जो है वो बहुत ही **healthy** है **actually** बहुत ही ज्यादा **taste** में भी बेहतरीन है और हमारे **North** के खाने से बहुत ही ज्यादा अलग है तो मुझे वहाँ का खाना भी बहुत अच्छा लगा और वहाँ के लोग भी बहुत अच्छे लगे।

प्रधानमंत्री जी : तो अब तो दोस्त भी बन गए होंगे तमिलनाडु में ?

विशाखा जी : जी ! जी वहाँ पर हम रुके थे **NIT Trichy** में, उसके बाद **IIT Madras** में तो उन दोनों जगह के **Students** से तो मेरी दोस्ती हो गई है। **Plus** बीच में एक **CII** का **Welcome Ceremony** था तो वहाँ पे वहाँ के आस-पास के **college** के भी बहुत सारे **students** आये थे। तो वहाँ हमने उन **students** से भी **interact** किया और मुझे बहुत अच्छा लगा उन लोगों से मिल के, काफ़ी लोग तो मेरे दोस्त भी हैं। और कुछ **delegate** से भी मिले थे जो तमिलनाडु के **delegate** बिहार आ रहे थे तो हमारी बातचीत उनसे भी हुई थी और हम अभी भी आपस में बात करते हैं तो मुझे बहुत अच्छा लगता है।

प्रधानमंत्री जी : तो विशाखा जी, आप एक **blog** लिखिए और **social media** पर ये आपको पूरा अनुभव एक तो इस युवा संगम का फिर 'एक भारत-श्रेष्ठ भारत' का और फिर तमिलनाडु में अपनापन जो मिला, जो आपको स्वागत-सत्कार हुआ। तमिल लोगों का प्यार मिला, ये सारी चीजें देश को बताइये आप। तो लिखोगी आप ?

विशाखा जी : जी जरूर !

प्रधानमंत्री जी : तो मेरी तरफ़ से आपको बहुत शुभकामना है और बहुत-बहुत धन्यवाद।

विशाखा जी : जी **thank you so much**। नमस्कार।

ग्यामर और विशाखा आपको मेरी बहुत-बहुत शुभकामनाएं। युवा संगम में आपने जो सीखा है, वो जीवनपर्यंत आपके साथ रहे। यही मेरी आप सबके प्रति शुभकामना है।

साथियो, भारत की शक्ति इसकी विविधता में है। हमारे देश में देखने के लिए बहुत कुछ है। इसी को देखते हुए **Education Ministry** ने 'युवासंगम' नाम से एक बेहतरीन पहल की है। इस पहल का उद्देश्य **People to People Connect** बढ़ाने के साथ ही देश के युवाओं को आपस में घुलने-मिलने का मौका देना। विभिन्न राज्यों के उच्च शिक्षा संस्थानों को इससे जोड़ा गया है। 'युवासंगम' में युवा दूसरे राज्यों के शहरों और गावों में जाते हैं, उन्हें अलग-अलग तरह के लोगों के साथ मिलने का मौका मिलता है। युवासंगम के **First Round** में लगभग 1200 युवा, देश के 22 राज्यों का दौरा कर चुके हैं। जो भी युवा इसका हिस्सा बने हैं, वे अपने साथ ऐसी यादें लेकर वापस लौट रहे हैं, जो जीवनभर उनके हृदय में बसी रहेंगी। हमने देखा है किकई बड़ी कंपनियों के **CEO, Business leaders**, उन्होंने **Bag-Packers** की तरह भारत में समय गुजारा है। मैं जब दूसरे देशों के **Leaders** से मिलता हूँ, तो कई बार वो भी बताते हैं कि वो अपनी युवावस्था में भारत घूमने के लिए गए थे। हमारे भारत में इतना कुछ जानने और देखने के लिए है कि आपकी उत्सुकता हर बार बढ़ती ही जाएगी। मुझे उम्मीद है कि इन रोमांचक अनुभवों को जानकर आप भी देश के अलग-अलग हिस्सों की यात्रा के लिए जरूर प्रेरित होंगे।

मेरे प्यारे देशवासियो, कुछ दिन पहले ही मैं जापान में हिरोशिमा में था। वहाँ मुझे **Hiroshima Peace Memorial museum** में जाने का अवसर मिला। ये एक भावुक कर देने वाला अनुभव था। जब हम इतिहास की यादों को संजोकर रखते हैं तो वो आने वाली पीढ़ियों की बहुत मदद करता है। कई बार **Museum** में हमें नए सबक मिलते हैं तो कई बार हमें बहुत कुछ सीखने को मिलता है। कुछ दिन पहले ही भारत में **International Museum Expo** का भी आयोजन किया था। इसमें दुनिया के 1200 से अधिक **Museums** की विशेषताओं को दर्शाया गया। हमारे यहाँ भारत में अलग-अलग प्रकार के ऐसे कई **Museums** हैं, जो हमारे अतीत से जुड़े अनेक पहलुओं को प्रदर्शित करते हैं, जैसे, गुरुग्राम में एक अनोखा संग्रहालय है - **Museo Camera**, इसमें 1860 के बाद के 8 हजार से ज्यादा कैमरों का **collection** मौजूद है। तमिलनाडु के **Museum of Possibilities** को हमारे दिव्यांगजनों को ध्यान में रखकर, **design** किया गया है। मुंबई का छत्रपति शिवाजी महाराज वास्तु संग्रहालय एक ऐसा **museum** है, जिसमें 70 हजार से भी अधिक चीजें संरक्षित की गई हैं। साल 2010 में स्थापित, **Indian Memory Project** एक तरह का **Online museum** है। ये जो दुनियाभर से भेजी गयी तस्वीरों और कहानियों के माध्यम से भारत के गौरवशाली इतिहास की कड़ियों को जोड़ने में जुटा है। विभाजन की विभिन्निका से

जुड़ी स्मृतियों को भी सामने लाने का प्रयास किया गया है। बीते वर्षों में भी हमने भारत में नए-नए तरह के **museum** और **memorial** बनते देखे हैं। स्वाधीनता संग्राम में आदिवासी भाई-बहनों के योगदान को समर्पित 10 नए **museum** बनाए जा रहे हैं। कोलकाता के **Victoria Memorial** में बिप्लोबी भारत **Gallery** हो या फिर जलियावाला बाग **memorial** का पुनुरुद्धार, देश के सभी पूर्व प्रधानमंत्रियों को समर्पित **PM Museum** भी आज दिल्ली की शोभा बढ़ा रहा है। दिल्ली में ही **National War Memorial** और **Police Memorial** में हर रोज अनेकों लोग शहीदों को नमन करने आते हैं। ऐतिहासिक दांडी यात्रा को समर्पित दांडी **memorial** हो या फिर **Statue of Unity Museum**. खैर, मुझे यहीं रुक जाना पड़ेगा क्योंकि देशभर में **Museums** की **list** काफ़ी लम्बी है और पहली बार देश में सभी **museums** के बारे में जरूरी जानकारियों को **compile** भी किया गया है। **Museum** किस **Theme** पर आधारित है, वहाँ किस तरह की वस्तुएं रखी हैं, वहाँ की **contact details** क्या है - ये सब कुछ एक **online directory** में समाहित है। मेरा आपसे आग्रह है कि आपको जब भी मौका मिले, अपने देश के इन **Museums** को देखने जरूर जाएँ। आप वहाँ की आकर्षक तस्वीरों को **# (Hashtag) Museum Memories** पर **share** करना भी ना भूलें। इससे अपनी वैभवशाली संस्कृति के साथ हम भारतीयों का जुड़ाव और मजबूत होगा।

मेरे प्यारे देशवासियों, हम सबने एक कहावत कई बार सुनी होगी, बार-बार सुनी होगी - बिन पानी सब सूना। बिना पानी जीवन पर संकट तो रहता ही है, व्यक्ति और देश का विकास भी ठप्प पड़ जाता है। भविष्य की इसी चुनौती को देखते हुए आज देश के हर जिले में 75 अमृत सरोवरों का निर्माण किया जा रहा है। हमारे अमृत सरोवर, इसलिए विशेष हैं, क्योंकि, ये आजादी के अमृत काल में बन रहे हैं और इसमें लोगों का अमृत प्रयास लगा है। आपको जानकर अच्छा लगेगा कि अब तक 50 हजार से ज्यादा अमृत सरोवरों का निर्माण भी हो चुका है। ये जल संरक्षण की दिशा में बहुत बड़ा कदम है।

साथियों, हम हर गर्मी में इसी तरह, पानी से जुड़ी चुनौतियों के बारे में बात करते रहते हैं। इस बार भी हम इस विषय को लेंगे, लेकिन इस बार चर्चा करेंगे जल संरक्षण से जुड़े **Start-Ups** की। एक **Start-Up** है **-FluxGen**। ये **Start-Up IOT enabled** तकनीक के जरिए **water management** के विकल्प देता है। ये **technology** पानी के इस्तेमाल के **patterns** बताएगा और पानी के प्रभावी इस्तेमाल में मदद करेगा। एक और **startup** है **LivNSense**। ये **artificial intelligence** और **machine learning** पर आधारित **platform** है। इसकी मदद से **water distribution** की प्रभावी निगरानी की जा सकेगी। इससे ये भी पता चल सकेगा कि कहाँ कितना पानी बर्बाद हो रहा है। एक और **Start-Up** है 'कुंभी कागज (**KumbhiKagaz**)'। ये कुंभी कागज (**KumbhiKagaz**) एक ऐसा विषय है, मुझे पक्का विश्वास है, आपको भी बहुत पसंद आएगा। 'कुंभी कागज' (**KumbhiKagaz**) **Start-Up** उसने एक विशेष काम शुरू किया है। वे जलकुंभी से कागज बनाने का काम कर रहे हैं, यानी, जो जलकुंभी, कभी, जलस्रोतों के लिए एक समस्या समझी जाती थी, उसी से अब कागज बनने लगा है।

साथियों, कई युवा अगर **innovation** और **technology** के जरिए काम कर रहे हैं, तो कई युवा ऐसे भी हैं जो समाज को जागरूक करने के **mission** में भी लगे हुए हैं जैसे कि छत्तीसगढ़ में बालोद जिले के युवा हैं। यहाँ के युवाओं ने पानी बचाने के लिए एक अभियान शुरू किया है। ये घर-घर जाकर लोगों को जल-संरक्षण के लिए जागरूक करते हैं। कहीं शादी-ब्याह जैसा कोई आयोजन होता है, तो, युवाओं का ये **group** वहाँ जाकर, पानी का दुरुपयोग कैसे रोका जा सकता है, इसकी जानकारी देता है। पानी के सदुपयोग से जुड़ा एक प्रेरक प्रयास झारखंड के खूंटी जिले में भी हो रहा है। खूंटी में लोगों ने पानी के संकट से निपटने के लिए बोरी बाँध का रास्ता निकाला है। बोरी बांध से पानी इकट्ठा होने के कारण यहाँ साग-सब्जियाँ भी पैदा होने लगी हैं। इससे लोगों की आमदनी भी बढ़ रही है, और, इलाके की जरूरतें भी पूरी हो रहीं हैं। जनभागीदारी का कोई भी प्रयास कैसे कई बदलावों को साथ लेकर आता है, खूंटी इसका एक आकर्षक उदाहरण बन गया है। मैं, यहाँ के लोगों को इस प्रयास के लिए बहुत-बहुत बधाई देता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियों, 1965 के युद्ध के समय, हमारे पूर्व प्रधानमंत्री लाल बहादुर शास्त्री जी ने जय जवान, जय किसान का नारा दिया था। बाद में अटल जी ने इसमें जय विज्ञान भी जोड़ दिया था। कुछ वर्ष पहले, देश के वैज्ञानिकों से बात करते हुए मैंने जय अनुसंधान की बात की थी। 'मन की बात' में आज बात एक ऐसे व्यक्ति की, एक ऐसी संस्था की, जो, जय जवान, जय किसान, जय विज्ञान और जय अनुसंधान, इन चारों का ही प्रतिबिंब है। ये सज्जन हैं, महाराष्ट्र के श्रीमान् शिवाजी शामराव डोले जी। शिवाजी डोले, नासिक जिले के एक छोटे से गाँव के रहने वाले हैं। वो गरीब आदिवासी किसान परिवार से आते हैं, और, एक पूर्व सैनिक भी हैं। फौज में रहते हुए उन्होंने अपना जीवन देश के लिए लगाया। **Retire** होने के बाद उन्होंने कुछ नया सीखने का फैसला किया और **Agriculture** में **Diploma** किया, यानी, वो, जय जवान से, जय किसान की तरफ बढ़ चले।

अब हर पल उनकी कोशिश यही रहती है कि कैसे कृषि क्षेत्र में अपना अधिक से अधिक योगदान दें। अपने इस अभियान में शिवाजी डोले जी ने 20 लोगों की एक छोटी-सी Team बनाई और कुछ पूर्व सैनिकों को भी इसमें जोड़ा। इसके बाद उनकी इस Team ने Venkateshwara Co-Operative Power & Agro Processing Limited नाम की एक सहकारी संस्था का प्रबंधन अपने हाथ में ले लिया। ये सहकारी संस्था निष्क्रिय पड़ी थी, जिसे revive करने का बीड़ा उन्होंने उठाया। देखते ही देखते आज Venkateshwara Co-Operative का विस्तार कई जिलों में हो गया है। आज ये team महाराष्ट्र और कर्नाटका में काम कर रही है। इससे करीब 18 हजार लोग जुड़े हैं, जिनमें काफी संख्या में हमारे Ex-Servicemen भी हैं। नासिक के मालेगाँव में इस team के सदस्य 500 एकड़ से ज्यादा जमीन में Agro Farming कर रहे हैं। ये team जल संरक्षण के लिए भी कई तालाब भी बनवाने में जुटी है। खास बात यह है कि इन्होंने Organic Farming और Dairy भी शुरू की है। अब इनके उगाए अंगूरों को यूरोप में भी export किया जा रहा है। इस team की जो दो बड़ी विशेषतायें हैं, जिसने मेरा ध्यान आकर्षित किया है, वो ये है - जय विज्ञान और जय अनुसंधान। इसके सदस्य technology और Modern Agro Practices का अधिक से अधिक उपयोग कर रहे हैं। दूसरी विशेषता ये है कि वे export के लिए जरूरी कई तरह के certifications पर भी focus कर रहे हैं। 'सहकार से समृद्धि' की भावना के साथ काम कर रही इस team की मैं सराहना करता हूँ। इस प्रयास से ना सिर्फ बड़ी संख्या में लोगों का सशक्तिकरण हुआ है, बल्कि, आजीविका के अनेक साधन भी बने हैं। मुझे उम्मीद है कि यह प्रयास 'मन की बात' के हर श्रोता को प्रेरित करेगा।

मेरे प्यारे देशवासियो, आज 28 मई को, महान स्वतंत्रता सेनानी, वीर सावरकर जी की जयंती है। उनके त्याग, साहस और संकल्प-शक्ति से जुड़ी गाथाएँ आज भी हम सबको प्रेरित करती हैं। मैं, वो दिन भूल नहीं सकता, जब मैं, अंडमान में, उस कोठरी में गया था जहाँ वीर सावरकर ने कालापानी की सजा काटी थी। वीर सावरकर का व्यक्तित्व दृढ़ता और विशालता से समाहित था। उनके निर्भीक और स्वाभिमानी स्वाभाव को गुलामी की मानसिकता बिल्कुल भी रास नहीं आती थी। स्वतंत्रता आंदोलन ही नहीं, सामाजिक समानता और सामाजिक न्याय के लिए भी वीर सावरकर ने जितना कुछ किया उसे आज भी याद किया जाता है।

साथियो, कुछ दिन बाद 4 जून को संत कबीरदास जी की भी जयंती है। कबीरदास जी ने जो मार्ग हमें दिखाया है, वो आज भी उतना ही प्रासंगिक है। कबीरदास जी कहते थे,

“कबीरा कुआँ एक है, पानी भरे अनेक।

बर्तन में ही भेद है, पानी सब में एक।।”

यानी, कुएं पर भले भिन्न-भिन्न तरह के लोग पानी भरने आए, लेकिन, कुआँ किसी में भेद नहीं करता, पानी तो सभी बर्तनों में एक ही होता है। संत कबीर ने समाज को बांटने वाली हर कुप्रथा का विरोध किया, समाज को जागृत करने का प्रयास किया। आज, जब देश विकसित होने के संकल्प के साथ आगे बढ़ रहा है, तो हमें, संत कबीर से प्रेरणा लेते हुए, समाज को सशक्त करने के अपने प्रयास और बढ़ाने चाहिए।

मेरे प्यारे देशवासियो, अब मैं आपसे देश की एक ऐसी महान हस्ती के बारे में चर्चा करने जा रहा हूँ जिन्होंने राजनीति और फिल्म जगत में अपनी अद्भुत प्रतिभा के बल पर अमिट छाप छोड़ी। इस महान हस्ती का नाम है एन.टी. रामाराव, जिन्हें हम सभी, एन.टी.आर(NTR) के नाम से भी जानते हैं। आज, एन.टी.आर की 100वीं जयंती है। अपनी बहुमुखी प्रतिभा के बल पर वो न सिर्फ तेलुगु सिनेमा के महानायक बने, बल्कि उन्होंने, करोड़ों लोगों का दिल भी जीता। क्या आपको मालूम है कि उन्होंने 300 से अधिक फिल्मों में काम किया था? उन्होंने कई ऐतिहासिक पात्रों को अपने अभिनय के दम पर फिर से जीवंत कर दिया था। भगवान कृष्ण, राम और ऐसी कई अन्य भूमिकाओं में एन.टी.आर की acting को लोगों ने इतना पसंद किया कि लोग उन्हें आज भी याद करते हैं। एन.टी.आर ने सिनेमा जगत के साथ-साथ राजनीति में भी अपनी अलग पहचान बनाई थी। यहाँभी उन्हें लोगों का भरपूर प्यार और आशीर्वाद मिला। देश-दुनिया में लाखों लोगों के दिलों पर राज करने वाले एन.टी. रामाराव जी को मैं अपनी विनम्र श्रद्धांजलि अर्पित करता हूँ।

मेरे प्यारे देशवासियो, 'मन की बात' में इस बार इतना ही। अगली बार कुछ नए विषयों के साथ आपके बीच आऊँगा, तब तक कुछ इलाकों में गर्मी और ज्यादा बढ़ चुकी होगी। कहीं-कहीं पर बारिश भी शुरू हो जाएगी। आपको मौसम की हर परिस्थिति में अपनी सेहत का ध्यान रखना है। 21 जून को हम 'World Yoga Day' भी मनाएंगे। उसकी भी देश-विदेश में

तैयारियां चल रही हैं। आप इन तैयारियों के बारे में भी अपने 'मन की बात' मुझे लिखते रहिए। किसी और विषय पर कोई और जानकारी अगर आपको मिले तो वो भी मुझे बताइयेगा। मेरा प्रयास ज्यादा से ज्यादा सुझावों को 'मन की बात' में लेने का रहेगा। एक बार फिर आप सभी का बहुत-बहुत धन्यवाद। अब मिलेंगे - अगले महीने, तब तक के लिए मुझे विदा दीजिए।

नमस्कार।

\*\*\*\*\*

**DS/SH/VK**

(Release ID: 1927829) Visitor Counter : 962

Read this release in: English